गृहस्थ योग
एक सिद्ध योग

- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

गृहस्थ-योग एक सिद्ध योग

◆

लेखक

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

◆

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००

◆

पुनरावृत्ति सन् २०१३ मूल्य : ९.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निवेदन

स्त्री-पुरुष का सहचरत्व एक स्वाभाविक, आवश्यक एवं उपयोगी कार्य है। यह प्रचलन सृष्टि के प्रारंभ काल से ही चला आया है और अंत तक चलता रहेगा। यह सहचरत्व आमतौर से प्रायः हर एक वयस्क स्त्री-पुरुष को स्वीकार करना पड़ता है। परंतु इस गृहस्थ धर्म में अनेक प्रकार की ऐसी विकृतियाँ पैदा हो गई हैं, जिनके कारण देखा जाता है कि स्त्री-पुरुष आपस में उतने संतुष्ट नहीं रह पाते, जिससे सहचरत्व का सच्चा सुख प्राप्त किया जा सके। पिछले दिनों तो यह विकृतियाँ इतनी अधिक हो गईं थी कि लोग उससे ऊबने लगे; उसमें दोष देखने लगे और उससे पृथक् रहने की बात सोचने लगे। धर्ममंच तक यह प्रश्न पहुँचा और जहाँ-तहाँ ऐसी विचारधारा प्रगट की जाने लगी, जिससे गृहस्थ बनना एक प्रकार की निर्बलता, गिरावट समझी जाने लगी। गृहस्थ बनना नरक का मार्ग है और घरबार को छोड़ बाबाजी बन जाना स्वर्ग का रास्ता है; यह विचारधारा हमारे देश में पिछले दिनों अधिक पनपी। फलस्वरूप चौरासी लाख साधु हमें इधर-उधर फिरते नजर आते हैं।

हमें मालूम है कि उपरोक्त विचारधारा गलत है, हम जानते हैं कि गृहस्थ और संन्यास दोनों अवस्थाओं में समान रूप से आत्मोन्नति की जा सकती है। गृहस्थ धर्म का उचित रीति से पालन करने से भी मनुष्य योगफल को प्राप्त कर सकता है और स्वर्ग एवं मुक्ति का अधिकारी बन सकता है। इस तथ्य के ऊपर इस पुस्तक में प्रकाश डाला गया है। हमें आशा है कि यह पुस्तक पाठकों को पारिवारिक जीवन का सुख तथा आत्मिक आनंद उपलब्ध करने में सहायक होगी।

—श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विषय-सूची

१. गृहस्थ योग	४
२. दृष्टिकोण का परिवर्तन	८
३. गृहस्थ में वैराग्य	१२
४. गृहस्थ धर्म तुच्छ नहीं है	१५
५. गृहस्थ योग से परम पद	२१
६. गृहस्थ योग के कुछ मंत्र	२७
७. परिवार की चतुर्विधि पूजा	३५
८. पारिवारिक स्वराज्य	४४
९. सद्व्यवहार की आवश्यकता	४८

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गृहस्थ-योग

'योग' का अर्थ है—'जोड़ना'—'मिलाना'। मनुष्य की साधारण स्थिति ऐसी होती है जिसमें वह अपूर्ण होता है। इस अपूर्णता को मिटाने के लिए वह किसी दूसरी शक्ति के साथ अपने-आपको जोड़कर अधिक शक्ति का संचय करता है; अपनी सामर्थ्य बढ़ाता है और उस सामर्थ्य के बल से अपूर्णता को दूर कर पूर्णता की ओर तीव्रगति से बढ़ता जाता है, यही योग का उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हठयोग, राजयोग, जपयोग, लययोग, तंत्रयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, कर्मयोग, स्वरयोग, ऋजुयोग, महायोग, कुंडलिनी योग, बुद्धियोग, समत्त्वयोग, प्राणयोग, ध्यानयोग, सांख्ययोग, जड़योग, सूर्ययोग, चंद्रयोग, सहजयोग, प्रणवयोग, नित्ययोग आदि ८४ प्रसिद्ध योग और ७०० अप्रसिद्ध योग हैं। इन विभिन्न योगों की कार्यप्रणाली, विधि व्यवस्था और साधना पद्धति एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं, तो भी इन सबकी जड़ में एक ही तथ्य काम कर रहा है। माध्यम सबके अलग-अलग हैं, पर उन सभी माध्यमों द्वारा एक ही तत्त्व ग्रहण किया जाता है। तुच्छता से महानता की ओर, अपूर्णता से पूर्णता की ओर, असत् से सत् की ओर, तम से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर जो प्रगति होती है उसी का नाम योग है। अणु आत्मा को परम आत्मा बनाने का प्रयत्न ही योग है। यह प्रयत्न जिन-जिन मार्गों से होता है, उन्हें योग मार्ग कहते हैं।

एक स्थान तक पहुँचने के लिए विभिन्न दिशाओं से विभिन्न मार्ग होते हैं, आत्म विस्तार के भी अनेक मार्ग हैं। इन मार्गों में स्थूल दृष्टि से भिन्नता होते हुए भी सूक्ष्म दृष्टि से पूर्णरूपेण एकता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। जैसे भूख बुझाने के लिए कोई रोटी, कोई चावल, कोई दलिया, कोई मिठाई, कोई फल, कोई मांस खाता है। ये सब चीजें एक-दूसरे से बिल्कुल पृथक् प्रकार की हैं, तो भी इन सबसे 'भूख मिटाना' यह एक ही उद्देश्य पूर्ण होता है। इसी प्रकार योग के नाना रूपों का एक ही प्रयोजन है—आत्म-भाव को विस्तृत करना—तुच्छता को महानता की पूँछ के साथ बाँध देना।

अनेक प्रकार के योगों में एक 'गृहस्थ योग' भी है। गंभीरतापूर्वक इसके ऊपर जितना ही विचार किया जाता है, यह उतना ही अधिक महत्त्वपूर्ण, सर्व सुलभ तथा स्वल्प श्रमसाध्य है। इतना होते हुए भी इससे प्राप्त होने वाली जो सिद्धि है, वह अन्य किसी भी योग से कम नहीं, वरन् अधिक ही है। गृहस्थाश्रम अन्य तीनों आश्रमों की पुष्टि और वृद्धि करने वाला है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास यह तीनों ही आश्रम, गृहस्थाश्रम को व्यवस्थित और सुख-शांतिमय बनाने के लिए हैं। ब्रह्मचारी इसलिए ब्रह्मचर्य का पालन करता है कि उसका भावी गृहस्थ जीवन शक्तिपूर्ण-समृद्ध हो। वानप्रस्थ और संन्यासी लोग, लोकहित की साधना करते हैं, संसार को अधिक सुख-शांतिमय बनाने का प्रयत्न करते हैं। यह 'लोक' और 'संसार' क्या है ? दूसरे शब्दों में गृहस्थाश्रम ही है। तीनों आश्रम एक ओर और गृहस्थ आश्रम दूसरी ओर—यह दोनों पलड़े बराबर हैं। यदि गृहस्थाश्रम की व्यवस्था बिगड़ जाए तो अन्य तीनों आश्रमों की मृत्यु ही समझिये।

गृहस्थ धर्म का पालन करना धर्मशास्त्रों के अनुसार मनुष्य का आवश्यक कर्तव्य है। लिखा है कि संतान के बिना पितर नरक को जाते हैं, उनकी सद्गति नहीं होती। लिखा है कि संतान उत्पन्न किये बिना पितृ-ऋण से छुटकारा नहीं मिलता। कहते हैं कि जिनकी संतति न हो उनका प्रातःकाल मुख देखने से पाप लगता है। इस प्रकार के और भी अनेक मंतव्य हिंदू धर्म में प्रचलित हैं, जिनका तात्पर्य यह है कि गृहस्थ धर्म का पालन करना आवश्यक है। इस

Free Reading Material of Over 1000 books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Parivar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & Other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर इतना जोर क्यों दिया गया है ? इस बात पर जब तात्त्विक दृष्टि से गंभीर विवेचना की जाती है, तब प्रकट होता है कि गृहस्थ धर्म एक प्रकार की योग साधना है, जिससे आत्मिक उन्नति होती है, स्वर्ग मिलता है, मुक्ति प्राप्त होती है और ब्रह्म निर्वाण की सिद्धि मिलती है। प्राचीन समय में अधिकांश ऋषि गृहस्थ थे। वशिष्ठ जी के सौ पुत्र थे, अत्रिजी की स्त्री अनुसूया थीं, गौतम की पत्नी अहिल्या थी, जमदग्नि के पुत्र परशुराम थे, च्यवन की स्त्री सुकन्या थी, याज्ञवल्क्य की दो स्त्री—गार्गी और मैत्रेयी थी, लोमश के पुत्र शृंगी ऋषि थे। वृद्धावस्था में संन्यास लिया हो तो यह बात दूसरी है परंतु प्राचीन काल में जितने भी ऋषि हुए हैं, वे प्रायः सभी गृहस्थ रहे हैं। गृहस्थ में ही उन्होंने तप किये हैं और ब्रह्म निर्वाण पाया है। योगिराज कृष्ण और योगेश्वर शंकर दोनों को ही हम गृहस्थ रूप में देखते हैं। प्राचीन काल में बाल रखाने, नंगे बदन रहने, खड़ाऊ पहनने, मृगछाला बिछाने का आम रिवाज था। घनी आबादी होने के कारण छोटे गाँव और छोटी कुटियाँ होती थीं। इन चिह्नों के आधार पर गृहस्थ-ऋषियों को गृहत्यागी मानना अपने अज्ञान का प्रदर्शन करना है।

आत्मोन्नति करने के लिए गृहस्थ धर्म एक प्राकृतिक, स्वाभाविक, आवश्यक और सर्वसुलभ योग है। जब तक लड़का अकेला रहता है, तब उसकी आत्म-भावना का दायरा छोटा रहता है। वह अपने ही खाने, पहनने, पढ़ने, खेलने तथा प्रसन्न रहने की बात सोचता है। उसका कार्य क्षेत्र अपने आप तक ही सीमित रहता है। जब विवाह हो जाता है तो यह दायरा बढ़ता है, वह अपनी पत्नी की सुख-सुविधाओं के बारे में सोचने लगता है। अपने सुख और मर्जी पर प्रतिबंध लगाकर पत्नी की आवश्यकताएँ पूरी करता है; उसकी सेवा, सहायता और प्रसन्नता में अपनी शक्तियों को खर्च करता है। कहने का तात्पर्य यह कि आत्मभाव की सीमा बढ़ती है, एक से बढ़कर दो तक आत्मीयता फैलती है। इसके बाद एक छोटे शिशु का जन्म होता है। इस बालक की सेवा-सहायता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और पालन-पोषण में निःस्वार्थ भाव से इतना मनोयोग लगता है कि अपनी निजी सुख-सुविधाओं का ध्यान मनुष्य भूल जाता है और बच्चे की सुविधा का ध्यान रखता है। इस प्रकार यह सीमा दो से बढ़कर तीन होती है। क्रमशः यह मर्यादा बढ़ती है। पिता कोई मधुर मिष्ठान्न लाता है तो उसे खुद नहीं खाता, वरन् बच्चों को बाँट देता है, खुद कठिनाई में रहकर भी बालकों की तंदुरुस्ती, शिक्षा और प्रसन्नता का ध्यान रखता है। दिन-दिन खुदगर्जी के ऊपर अंकुश लगता जाता है, आत्म-संयम सीखता जाता है और स्त्री, पुत्र, संबंधी, परिजन आदि में अपनी आत्मीयता बढ़ाता जाता है। क्रमशः आत्मोन्नति की ओर बढ़ता जाता है।

भगवान् मनु का कथन है कि—"पुरुष उसकी पत्नी और संतान मिलाकर ही एक 'पूरा मनुष्य' होता है।" जब तक यह सब नहीं होता तब तक वह अधकचरा, अधूरा और खंडित मनुष्य है। जैसे प्रवेशिका परीक्षा पास किये बिना कॉलेज में प्रवेश नहीं हो सकता, उसी प्रकार गृहस्थ की शिक्षा पाए बिना वानप्रस्थ, संन्यास आदि में प्रवेश करना कठिन है। आत्मीयता का दायरा क्रमशः ही बढ़ता है। अकेले से, पति-पत्नी दो में, फिर बालक के साथ तीन में, संबधियों में, पड़ोसियों में, गाँव, प्रांत, प्रदेश, राष्ट्र, विश्व में यह आत्मीयता क्रमशः बढ़ती है। आगे चलकर सारी मनुष्य जाति में आत्मभाव फैलता है। फिर पशु-पक्षियों में, कीट-पतंगों में, जड़-चैतन्य में यह आत्मभाव विकसित हो जाता है। जो प्रगति एक से बढ़कर दो में, दो से तीन में हुई थी, वही उन्नति धीरे-धीरे आगे बढ़ती जाती है और मनुष्य संपूर्ण चर-अचर में आत्मसत्ता को ही समाया देखता है, उसे परमात्मा की दिव्य ज्योति सर्वत्र जगमगाती दिखती है। पत्नी तक अपने मन को जितने अंशों में फैलाया जाता है, उतने अंशों में अपनी खुदगर्जी पर संयम होता है। बाल-बच्चों के होने पर यह आत्मसंयम और अधिक बढ़ता है, अंत में जीव पूर्णतया आत्मसंयमी हो जाता है। दूसरे के लिए अपने आपको भूलने का अभ्यास क्रमशः इतना अधिक पुष्ट हो जाता है कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपना कुछ रहता ही नहीं, सब कुछ विराना हो जाता है। "मेरा मुझको कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर" की ध्वनि उसके अंदर से निकलने लगती है। खुदी मिटती जाती है और खुदा मिलता जाता है। "मैं" का अंत होने से "तू" ही शेष रहता है। गृहस्थ योग की छोटी-सी सर्व-सुलभ साधना जब अपनी विकसित अवस्था तक पहुँचती है तो आत्मा, परमात्मा बन जाता है। अपूर्णता से छुटकारा पाकर पूर्णता उपलब्ध करता है और योग का वास्तविक उद्देश्य पूरा हो जाता है।

दृष्टिकोण का परिवर्तन

इस बात को भली प्रकार समझ रखना चाहिए कि योग का अर्थ अपनी तुच्छता, संकीर्णता को महानता, उदारता और विश्वबंधुत्व में जोड़ देना है। अर्थात् स्वार्थ को परिशोधित करके उसे परमार्थ बना लेना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए असंख्य प्रकार के योगों की साधनाएँ की जाती हैं, उन्हीं में से एक गृहस्थ योग की साधना है। अन्य साधनाओं की अपेक्षा यह अधिक सुखद और स्वाभाविक है। इसलिए आचार्यों ने गृहस्थ योग का दूसरा नाम सहज योग भी रखा है। महात्मा कबीर ने अपने पदों में सहज योग की बहुत चर्चा और प्रशंसा की है।

किसी वस्तु को समुचित रीति से उपयोग करने पर वह साधारण होते हुए भी बहुत बड़ा लाभ दिखा देती है और कोई वस्तु उत्तम होते हुए भी यदि इसका दुरुपयोग किया जाए, तो वह हानिकारक हो जाती है। दूध जैसे उत्तम पौष्टिक पदार्थ को भी यदि अविधिपूर्वक सेवन किया जाए तो वह रोग और मृत्यु का कारण बन सकता है, इसके विपरीत यदि जहर को भी उचित रीति से शोधन करके काम में लाया जाए तो वह अमृत के समान रसायन का काम देता है। गृहस्थाश्रम के संबंध में भी यही बात है। यदि उचित दृष्टिकोण के साथ आचरण किया तो गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी ब्रह्म निर्वाण प्राप्त किया जा सकता है, जैसाकि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनेक ऋषि, महात्मा, योगी और तपस्वी पूर्वकाल में प्राप्त कर चुके हैं। आजकल गृहस्थों को दुःख, चिंता, रोग, शोक, आधि-व्याधि, पाप-ताप में ग्रसित अधिक देखा जाता है। इससे ऐसा अनुमान न लगाना चाहिए कि इसका कारण गृहस्थाश्रम है। यह तो मानसिक विकारों का, कुविचार और कुसंस्कारों का फल है। दूषित मनोवृत्तियों के कारण हर एक आश्रम में, हर एक वर्ण में, हर एक देश में ऐसे ही संकट व दुख उपस्थित होंगे। इसके लिए गृहस्थाश्रम को दोष देना बेकार है। यदि वह वास्तव में ही दूषित, त्याज्य या तुच्छ होता, तो संसार के महापुरुषों, अवतारों और युग निर्माताओं ने इससे अपने को अलग रखा होता, किंतु हम देखते हैं कि विश्व की महानता का करीब-करीब समस्त इतिहास, गृहस्थाश्रम की धुरी पर केंद्रीभूत रहा है।

आत्मीयता की उन्नति के लिए अभ्यास करने का सबसे अच्छा स्थान अपना घर है। नट अपने घर के आँगन में कला खेलना सिखता है। बालक अपने घर में खड़ा होना और चलना-फिरना सिखता है। योग की साधना भी घर से ही आरंभ होनी चाहिए। प्रेम, त्याग और सेवा का अभ्यास करने के लिए अपने घर का क्षेत्र सबसे अच्छा है। इन तत्त्वों का प्रकाश जिस स्थान पर पड़ता है, वही चमकने लगता है। जब तक आत्मीयता के भावों की कमी रहती है, तब तक औरों के प्रति दुर्भाव, घृणा, क्रोध, उपेक्षा के भाव रहते हैं। किंतु जब अपनेपन के विचार बढ़ते हैं तो हलके दर्जे की चीजें भी बहुत सुंदर दिखाई पड़ने लगती हैं। माता अपने बच्चें के प्रति आत्म-भाव रखती है इसलिए यदि वह लाभदायक न हो, तो भी उससे भरपूर स्नेह करती है, पतिव्रता पत्नियों को अपने काले-कलूटे और दुर्गुणी पति भी इंद्र जैसे सुंदर और बृहस्पति जैसे गुणवान् लगते हैं।

दुनिया में सारे झगड़ों की जड़ यह है कि हम देते कम हैं और माँगते ज्यादा हैं। हमें चाहिए कि दें बहुत और बदला बिल्कुल न माँगें या बहुत कम पाने की आशा रखें। इस नीति को ग्रहण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करते ही हमारे आस-पास के सारे झगड़े मिट जाते हैं। आत्मीयता की महान् साधना में प्रवृत्त होने वाले को अपना दृष्टिकोण देने का, त्याग और सेवा का बनाना पड़ता है। आप प्रेम की उदार भावनाओं से अपने अंतःकरण को परिपूर्ण कर लीजिए और सगे-संबधियों के साथ त्याग एवं सेवा का व्यवहार करना आरंभ कर दीजिए। कुछ ही क्षणों के उपरांत एक चमत्कार होता हुआ दिखाई देने लगेगा। अपना छोटा-सा परिवार जो शायद बहुत दिनों से कलह और क्लेशों का घर बना हुआ है—सुख-शाति का स्वर्ग दिखने लगेगा। अपनी आत्मीयता की प्रेम भावनाएँ परिवार के आस-पास के लोगों से टकराकर अपने पास वापस लौट जाती हैं और वे आनंद की भीनी सुगंधित फुहार से छिड़ककर मुरझाये हुए अंतःकरण को हरा कर देती है।

माली अपने ऊपर जिस बगीची की जिम्मेदारी लेता है, उसे हरा-भरा बनाने, सर-सब्ज रखने का जी-जान से प्रयत्न करता है। यही दृष्टिकोण एक सद्गृहस्थ का होना चाहिए। उसे अनुभव करना चाहिए कि परमात्मा ने इन थोड़े-से पेड़ों को सींचने, खाद देने, संभालने और रखवाली करने का भार विशेष रूप से मुझे दिया है। यों तो समस्त समाज और समस्त जगत् के प्रति हमारे बहुत-से कर्तव्य हैं, परंतु इस छोटी बगीची का भार तो विशेष रूप से अपने ऊपर रखा हुआ है। अपने परिवार के हर एक व्यक्ति को स्वस्थ रखने, शिक्षित बनाने, सद्गुणी, सदाचारी और चतुर बनने की पूरी-पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर समझते हुए, इसे ईश्वर की आज्ञा का पालन मानते हुए अपना उत्तरदायित्व पूरा करने का प्रयत्न करना चाहिए। अपने परिवार के सदस्यों की सेवा भी परमार्थ, पुण्य, लोक सेवा, ईश्वर पूजा से किसी प्रकार कम नहीं है।

स्वार्थ और परमार्थ का मूल बीज अपने मनोभाव, दृष्टिकोण के ऊपर निर्भर है। यदि पत्नी के प्रति उसे अपनी नौकरानी, दासी, संपत्ति, भोग-सामग्री समझकर अपना मतलब गाँठने, सेवाएँ लेने,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शासन करने का भाव हो तो यह भाव ही स्वार्थ, नरक, कलह, भार, दुःख की ओर ले जाने वाला है। यदि उसे अपने उपवन का एक सुरम्य सरस वृक्ष समझकर उसके प्रति सात्विक त्यागमय सेवा का, पुनीत उदारतामय प्रेम का भाव हो, अपने स्वार्थ की अपेक्षा उसके स्वार्थ को महत्त्व देने का भाव हो तो यह भाव ही दांपत्य जीवन को, पत्नी सान्निध्य को परमार्थ, स्वर्ग, स्नेह और आनंद का घर बनाया जा सकता है। ''देना कम और लेना ज्यादा'' यह नीति झगड़े की, पाप की, कटुता की, नरक की जड़ है। ''देना ज्यादा और लेना कम से कम'' यह नीति प्रेम, सहयोग, पुण्य और स्वर्ग की जननी है। बदला चाहने, लेने, स्वार्थ साधने, सेवा कराने की स्वार्थ दृष्टि से यदि पत्नी, पुत्र, पिता, भाई, माता, बुआ, बहिन को देखा जाए तो यह सभी बड़े स्वार्थी, खुदगर्ज, बुरे, रूखे, उपेक्षा करने वाले, उद्दंड दिखाई देंगे। उनमें एक से एक बड़ी बुराई दिखाई पड़ेगी और ऐसा लगेगा, मानो गृहस्थ ही सारे दुखों, स्वार्थों और पापों का केंद्र है। कई व्यक्ति गृहस्थी पर ऐसा ही दोष लगाते हुए कुढ़ते रहते हैं, खिन्न रहते हैं एवं घर छोड़कर भाग खड़े होते हैं। असलं में यह दोष परिवार वालों का नहीं, वरन् उनके अपने दृष्टिकोण का दोष है। पीला चश्मा पहनने वाले को हर एक वस्तु पीली ही दिखाई पड़ती है।

प्रत्येक मनुष्य अपूर्ण है। यह अपूर्णता से पूर्णता की ओर यात्रा कर रहा है। ऐसी दशा में यह आशा नहीं रखनी चाहिए कि हमारे परिवार के सब सदस्य स्वर्ग के देवता, हमारे पूर्ण आज्ञानुवर्ती होंगे। जीव अपने साथ जन्म–जन्मांतरों के संस्कारों को साथ लाता है, यह संस्कार धीरे–धीरे, बड़े प्रयत्नपूर्वक बदले जाते हैं। एक दिन में उन सबका परिवर्तन नहीं हो सकता। इसलिए यह आशा रखना अनुचित है कि परिवार वाले पूर्णतया हमारे आज्ञानुवर्ती ही होंगे। उनकी त्रुटियों को सुधारने में, उन्हें आगे बढ़ाने में, उन्हें सुखी बनाने में संतोष प्राप्त करने का अभ्यास डालना चाहिए। अपनी इच्छाओं की पूर्ति से सुखी होने की आशा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करना, इस संसार से एक असंभव माँग करना है। दूसरे लोग हमारे लिए यह करें, परिवार वाले इस प्रकार का हमसे व्यवहार करें, इस बात के ऊपर अपनी प्रसन्नता को केंद्रित करना एक बड़ी भूल है। ऐसी भूल को जो लोग करते हैं, उन्हें गृहस्थ के आनंद से प्रायः पूर्णतया वंचित रहना पड़ता है।

स्मरण रखिये, गृहस्थ का पालन करना, एक प्रकार के योग की साधना करना है। इसमें परमार्थ, सेवा, प्रेम, सहायता, त्याग, उदारता और बदला पाने की इच्छा से विमुखता—यही दृष्टिकोण प्रधान है। जो इसको धारण किये हुए हैं, वही ब्राह्मी स्थिति में है, वह घर में रहते हुए भी संन्यासी है।

गृहस्थ में वैराग्य

गृहस्थ आश्रम की निंदा करते हुए कोई-कोई सज्जन ऐसा कहते हुए सुने जाते हैं कि "घर-गृहस्थी में पड़ना माया के बंधन में फँसना है।" उनकी दृष्टि में घर-गृहस्थी माया का पिटारा है और बिना गृहस्थी रहना स्वर्ग की निशानी है। परंतु विचार करने पर प्रतीत होता है कि उपरोक्त कथन कुछ विशेष महत्त्व का नहीं है। कारण यह है कि माया का बंधन बाहरी वस्तुओं या बाहरी मनुष्यों में नहीं, वरन् अपनी मनोवृत्तियों में है, यदि मन अपवित्र है, काम, क्रोध, लोभ से भरा हुआ है। तो जो बातें गृहस्थ में होती हैं, वही संन्यास से बाहर भी हो सकती हैं। हमने देखा है कि बहुत-से बाबाजी कहलाने वाले महाराज भिक्षा माँग-माँगकर धन जोड़ते हैं, मरने पर उनके पास प्रचुर धनराशि निकलती है। हमने देखा है कि गृहविहीन लोगों की इंद्रियाँ भी लोलुप होती हैं। शब्द, रस, रूप, गंध, स्पर्श में वे लोलुप रुचि प्रकट करते हैं, उनके आकर्षण से आकर्षित होते हैं। अपनी वस्तुओं से कुटी, वस्त्र, पुस्तक, पात्र, शिष्य, साथी आदि से ममता रखते हैं। यही सब बातें ही दूसरे रूप में गृहस्थों में होती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वैराग्य, त्याग, विरक्ति इन महातत्त्वों का सीधा संबंध अपने मनोभावों से है। यदि भावनाएँ संकीर्ण हों, कलुषित हों, स्वार्थमयी हों, तो चाहे जैसी उत्तम सात्त्विक स्थिति में मनुष्य क्यों न रहे, मन का विकार वहाँ भी पाप की दुराचार की पुष्टि करेगा। यदि भावनाएँ उदार एवं उत्तम हैं तो अनमिल और अनिष्टकारक स्थिति में भी मनुष्य पुण्य एवं पवित्रता उत्पन्न करेगा। महात्मा इमर्सन कहा करते थे कि "मुझे नरक में भेज दिया जाए तो भी मैं वहाँ अपने लिए स्वर्ग बना लूँगा।" वास्तविक सत्य यही है, हर आदमी अपनी भीतरी स्थिति का प्रतिबिंब दुनिया के दर्पण में देखता है। यदि उनके मन में माया है तो घर, बाहर, वन, आरण्य, मंदिर, स्वर्ग सब जगह माया ही माया है, माया के अतिरिक्त और कुछ नहीं। यदि मन साफ है, पवित्रता, प्रेम और परमार्थ की दृष्टि है तो घर का हर एक कोना पुनीत तपोवन से किसी भी प्रकार कम न रहेगा। राजा जनक प्रभृति अनेकों ऋषि हुए हैं, जिन्होंने गृहस्थ में रहने की साधना की और परम पद पाया।

वीरता भागने में नहीं, वरन् लड़ने में है। यदि गृहस्थाश्रम में अधिक कठिनाइयाँ हैं तो उनसे डरकर दूर रहना उचित नहीं। पानी में घुसे बिना तैरना कैसे सीखा जाएगा ? कोई व्यक्ति यह कहे कि मैं अखाड़े में जाकर व्यायाम करने की कठिनाई में पड़ना नहीं चाहता, परंतु पहलवान बनना चाहता हूँ, तो उसकी यह बात बालकों जैसी अनगढ़ होगी। काम, क्रोध, लोभ, मोह के दाव-घातों को देखना, उनसे परिचित होना, उनसे लड़कर विजय प्राप्त करना इन्हीं सब अभ्यासों के लिए वर्णाश्रम धर्म के तत्त्वदर्शी आचार्य गृहस्थाश्रम को सर्वश्रेष्ठ-सर्वोपरि आश्रम बताते हैं। संपूर्ण देवर्षि इसी महान् गुफा में से उत्पन्न और विकसित हुए हैं। जरा कल्पना तो कीजिये, यदि गृहस्थ धर्म जिसे निर्बुद्धि लोग माया या बंधन तक कह बैठते हैं, न होता तो राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसा, मुहम्मद, गांधी कहाँ से आते ? सीता, सावित्री, अनुसूया, मदालसा, दमयंती, पार्वती आदि सतियों का चरित्र कहाँ से सुनाई पड़ता ? इतिहास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के पृष्ठों पर जगमगाते हुए उज्ज्वल हीरे किस प्रकार दिखाई देते ? अन्य तीनों आश्रम बच्चे हैं, गृहस्थ उनका पिता है। पिता को बंधन कहना, नरक बताना, त्याज्य ठहराना एक प्रकार की विवेकहीनता है।

उत्तरदायित्व का भार पड़े बिना कोई व्यक्ति वास्तविक, गंभीर, जिम्मेदार और भारी-भरकम नहीं होता। अल्हड़ बछड़े बहुत कूदते-फाँदते और दुलत्तियाँ उड़ाते हैं, परंतु जब कंधे पर भार पड़ता है तो बड़ी सावधानी से एक-एक कदम रखना पड़ता है। हाथी जब गहरे पानी में धँसता है, तो अपना एक पैर भली प्रकार जमा लेता है तब दूसरे को आगे रखता है। उसकी सारी सावधानी और होशियारी उस समय एक स्थान पर केंद्रीभूत हो जाती है। जिस चित्तवृत्ति निरोध को, एकाग्रता को पातंजलि ने योग बताया है, वह एकाग्रता कोरी बातूनी जमाबंदी से नहीं आती, उसके लिए एक प्रेरणा, एक जिम्मेदारी चाहिए। गृहस्थाश्रम का बोझ पड़ने पर मनुष्य जिम्मेदारी की ओर कदम बढ़ाता है। अपना और अपने परिवार का बोझ पीठ पर लादकर उसे चलना पड़ता है इसलिए उच्छृंखलता को छोड़कर वह जिम्मेदारी अनुभव करता है। यह जिम्मेदारी ही आगे चलकर विवेकशीलता में परिणित हो जाती है। राजा को एक साम्राज्य के संचालन की बागडोर हाथ में लेकर जैसे सँभल-सँभलकर चलना पड़ता है, वैसे ही एक सद्गृहस्थ को पूरी दूरदर्शिता, विचारशीलता, धैर्य, सहनशीलता और आत्मसंयम के साथ अपना हर एक कदम उठाना पड़ता है। चाबुक से सवार जैसे घोड़े को अच्छी चाल चलना सिखाकर उसे हमेशा के लिए बढ़िया घोड़ा बना देता है, वैसे ही गृहस्थ धर्म भी ठोक-पीटकर, कड़ुवे-मीठे अनुभव कराकर एक मनुष्य को आत्म-संयमी, दूरदर्शी, गंभीर एवं स्थिर चित्त बना देता है। यह सब योग के लक्षण हैं। जैसे फल पककर समयानुसार डाली से स्वयं अलग हो जाता है वैसे ही गृहस्थ की डाल से चिपका हुआ मनुष्य धीरे-धीरे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्म-निग्रह और आत्म-त्याग की शिक्षा पाता रहता है और अंततः एक प्रकार का योगी हो जाता है।

लिप्सा, लालसा, तृष्णा, लोलुपता, मदांधता, अविवेक आदि बातें त्याज्य हैं, यह बुरी बातें गृहस्थ आश्रम में भी हो सकती हैं और आश्रमों में भी। इसीलिए गृहस्थ आश्रम त्यागने योग्य नहीं, वरन् अपनी कुवासनाएँ ही त्यागने योग्य हैं।

गृहस्थ धर्म तुच्छ नहीं है

ब्रह्मचर्य व्रत का पालन बहुत ही उत्तम, उपयोगी एवं लाभदायक साधना है। यह शारीरिक और मानसिक दोनों ही दृष्टियों से हितकर है। जो जितने अधिक समय तक ब्रह्मचारी रह सके, उसके लिए उतना ही अच्छा है। साधारणतः लड़कों को कम से कम २० वर्ष तक और लड़कियों को १६ वर्ष तक तो ब्रह्मचारी अवश्य ही रहना चाहिए। जो अपने मन को वश में रख सकें, वे अधिक समय तक रहें।

ब्रह्मचर्य में मानसिक संयम प्रधान है। यदि मन वासनाओं में भटकता रहे और शरीर को हठपूर्वक संयम में रखा जाए तो उससे लाभ की जगह पर हानि ही है। शारीरिक काम-सेवन से जितनी हानि है, उससे कई गुनी हानि मानसिक असंयम से है। वीर्यपात की क्षति आसानी से पूरी हो जाती है परंतु मानसिक विषय-चिंतन से जो उत्तेजना पैदा होती है, वह यदि तृप्त न हो तो कुचले हुए सर्प की तरह क्रुद्ध होकर अपने छेड़ने वालों के ऊपर आक्रमण करती है।

मनोविज्ञानशास्त्र के यशस्वी आचार्य डॉक्टर फ्राइड, डॉक्टर ब्राईन, डॉक्टर बर्न प्रभृति विद्वानों का मत है कि वासनाएँ कुचली जाने पर सुप्त मन से किसी कोने में एक बड़ा घाव लेकर पड़ी रहती हैं और जब अवसर पाती हैं, तभी भयानक, शारीरिक या मानसिक रोगों को उत्पन्न करती हैं। उनका कहना है कि पागलपन, मूर्च्छा, मृगी, उन्माद, नाड़ी संस्थान का विक्षेप, अनिद्रा, कायरता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आदि अनेक रोग वासनाओं के अनुचित रीति से कुचले जाने के कारण उत्पन्न होते हैं। इसलिए ब्रह्मचर्य की पहली शर्त 'मन की स्थिरता' मानी गई है। जिनका मन किन्हीं उत्तम विचारों में निमग्न रहता है, विषय-वृत्तियों की ओर जिनका ध्यान ही नहीं जाता या जाता है तो तुरंत ही अरुचि और घृणापूर्वक वहाँ से हट जाता है, वे ही ब्रह्मचारी हैं। जिसका मन वासना में भटकता है, चित्त पर जो काबू रख नहीं पाते, उनके शारीरिक ब्रह्मचर्य को विडंबना ही कहा जा सकता है।

किसी स्रोत में से पानी का प्रवाह जारी हो, किंतु उसके बहाव के मार्ग को रोक दिया जाए। तो वह पानी जमा होकर दूसरे मार्ग से फूट निकलेगा। मन से विषय-चिंतन और बाहर से ब्रह्मचर्य, यह भी इसी प्रकार का कार्य है। मन में वासना उत्पन्न होने से जो उत्तेजना पैदा होती है, वह फूट निकलने के लिए कोई न कोई मार्ग ढूँढ़ती है। साधारण मार्ग बंद होता है तो कोई और मार्ग बनाकर वह निकलती है। यह नया मार्ग अपेक्षाकृत बहुत खतरनाक और हानिकारक साबित होता है।

संसार भर की जनगणना की रिपोर्टों का अवलोकन करने से यह सच्चाई और भी अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाती है। विवाहित स्त्री-पुरुषों की जितनी मृत्यु होती है विधवा या विधुरों की मृत्यु का अनुपात प्रायः उससे ड्यौढ़ा रहता है। मोटी दृष्टि से देखने पर विवाहितों की जीवनी शक्ति अधिक और अविवाहितों की कम खर्च होती है। इससे विवाहितों की अल्पायु और रोगी रहने की संभावना अधिक प्रतीत होती है, परंतु होता इसका ठीक उलटा है। विवाहित लोग संभोगजन्य क्षय, बालकों का भरण-पोषण, अधिक चिंता तथा जिम्मेदारी आदि के भार को खींचते हुए भी जितनी आयु और निरोगता प्राप्त करते हैं, अविवाहित लोग उतनी नहीं कर पाते। इसका एक मात्र कारण वासना की अतृप्ति से उत्पन्न हुआ मानसिक उद्वेग है, जो बड़ा घातक होता है, उसकी विषाक्त ज्वाला से सारे जीवनतत्त्व भीतर ही भीतर जल-भुन जाते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं। चित्त की अस्थिरता और अशांति के कारण कोई कहने लायक महान् कार्य भी उनसे संपादित नहीं हो पाता, कोई बड़ी सफलता भी नहीं मिल पाती। इस प्रकार विवाहितों की अपेक्षा यह अविवाहित अधिक घाटे में रहते हैं।

पाठकों को हमारा आशय समझने में भूल न करनी चाहिए। हम ब्रह्मचर्य की अपेक्षा विवाहित जीवन को अच्छा बताने का प्रयत्न नहीं कर रहे हैं। ब्रह्मचर्य एक अत्यंत उपयोगी और हितकर साधना है, इसके लाभों की कोई गणना नहीं हो सकती। इन पंक्तियों में हम मानसिक असंयम और विवाहित जीवन की तुलना कर रहे हैं। जो व्यक्ति ब्रह्मचर्य की साधना में अपने को समर्थ न पावें, जो मानसिक वासना पर काबू न रख सकें उनके लिए यही उचित है कि विवाहित जीवन व्यतीत करें। होता भी ऐसा ही है—सौ में से निन्यानवें आदमी गृहस्थ जीवन बिताते हैं। इस स्वाभाविक प्रक्रिया में कोई अनुचित बात भी नहीं है।

यह सोचना ठीक नहीं कि गृहस्थाश्रम में बँधने से आध्यात्मिक उन्नति नहीं हो सकती। आत्मा को ऊँचा उठाकर परमात्मा तक ले जाना, यह पुनीत आत्मिक साधना अंतःकरण की भीतरी स्थिति से संबंध रखती है। बाह्य जीवन से इसका कुछ भी संबंध नहीं है। जिस प्रकार ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ या संन्यासी आत्म-साधना द्वारा जीवन लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते हैं, वैसे ही गृहस्थ भी कर सकता है। सदा सनातन काल से ऐसा होता आया है। अध्यात्म साधकों में गृहस्थ ही हम अधिक देखते हैं। प्राचीन काल के ऋषिगण आज के गैर जिम्मेदार और अव्यवस्थित बाबाओं से सर्वथा भिन्न थे। घनी बस्ती न बसाकर स्वच्छ वायु में दूर-दूर घर बनाना, पक्के मकान न बनाकर छोटी झोंपडियों में रहना, वस्त्रों से लदे न रहकर शरीर को खुला रखना आदि उस समय की साधारण प्रथाएँ थीं। उस समय के राजा तथा देवताओं के जो चित्र मिलते हैं, उससे वे सब भी कटि वस्त्र के अतिरिक्त और कोई कपड़ा पहने नहीं दिखते। यह उस समय की परिपाटी थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज जिस वेष-भूषा की नकल करके लोग अपने को साधु मान लेते हैं, वह पहनाव-उढ़ाव, रहन-सहन उस समय में सर्व साधारण का था।

यह एक बिल्कुल ही बे सिर-पैर का विचार है कि पुराने समय में ऋषि लोग अविवाहित ही रहते थे। यह ठीक है कि ऋषि-मुनियों में कुछ ऐसे भी थे, जो बहुत समय तक अथवा आजीवन ब्रह्मचारी रहते थे, पर उनमें से अधिकांश गृहस्थ थे। स्त्री-बच्चों के साथ होने से तपश्चर्या में, आत्मोन्नति में उन्हें सहायता मिलती थी। इतिहास पुराणों में पग-पग पर इस बात की साक्षी मिलती है कि भारतीय महर्षिगण, योगी, यती, साधु, तपस्वी, अन्वेषक, चिकित्सक, वक्ता, रचयिता, उपदेष्टा, दार्शनिक, अध्यापक, नेता आदि विविध रूपों में अपना जीवन-यापन करते थे और अपने महान् कार्य में स्त्री-बच्चों को भी भागीदार बनाते थे।

आध्यात्मिक मार्ग पर कदम बढ़ाने वाले साधकों के आज अज्ञान और अविवेक भरे मूढ़ विश्वासों ने एक भारी उलझन पैदा कर दी है। "आत्म साधना गृहस्थ से नहीं हो सकती, स्त्री नरक का द्वार है, कुटुंब-परिवार माया का बंधन है। इनके रहते भजन नहीं हो सकता, परमात्मा नहीं मिल सकता।" इस प्रकार की अज्ञानजन्य भ्रमपूर्ण कल्पनाएँ साधक के मस्तिष्क में चक्कर लगाती हैं। परिणाम यह होता है कि या तो वह आत्म मार्ग को अपने लिए असंभव समझकर उसे छोड़ देता है या फिर पारिवारिक महान् उत्तरदायित्व को छोड़कर भीख तक माँग खाने के लिए घर से निकल भागता है। यदि बीच में ही लटका रहा तो और भी अधिक दुर्दशा होती है। परिवार उसे गले में बँधे हुए चक्की के पाट की तरह भार रूप प्रतीत होता है। उपेक्षा, लापरवाही, गैर जिम्मेदार की दृष्टि से बर्ताव करने के कारण उसके हर एक व्यवहार में कुरूपता एवं कटुता रहने लगती है। स्त्री-बच्चे सोचते हैं कि यह हमारे जीवन को दुखमय बनाने वाला है। अतएव शत्रुता के भाव मन में जगते हैं, प्रतिशोध की वृत्तियाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पैदा होती हैं, कटुता, कलह, घृणा और तिरष्कार के विषैले वातावरण की सृष्टि होती है। उस वातावरण में रहने वाला कोई भी प्राणी स्वस्थता और प्रसन्नता कायम नहीं रख सकता।

वास्तविक बात यह है कि आत्मसाधना में जो विक्षेप पैदा होता है, उसका कारण अपनी कुवासना, संकीर्णता, तुच्छता, अनुदारता और स्वार्थपरता है। ये दुर्भाव ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ या संन्यास जिस भी आश्रम में रहेंगे उसे ही पापमय बना देंगे। इसके विपरीत यदि अपने मन में त्याग, सेवा, सत्यता, सृजनता एवं उदारता की भावनाएँ विद्यमान हों, तो कोई भी आश्रम स्वर्गदायक, मुक्तिप्रद, परम तत्त्व को जानने वाला हो सकता है। आध्यात्मिक साधकों को अपने मन के इस भ्रम को पूर्णतया बहिष्कृत कर देना चाहिए कि गृहस्थाश्रम कोई छोटा या गिराने वाला धर्म है। यदि समुचित रीति से उसका पालन किया जाए तो ब्रह्मचर्य या संन्यास की तरह वह भी सिद्धिदाता प्रमाणित हो सकता है।

गृहस्थ धर्म जीवन का एक पुनीत, आवश्यक एवं उपयोगी अनुष्ठान है। स्त्री और पुरुष के एकत्रित होने से दो अपूर्ण जीवन एक पूर्ण जीवन का रूप धारण करते हैं। पक्षी के दो पंखों की तरह, रथ के दो पहियों की तरह, स्त्री और पुरुष का मिलन एक दृढ़ता एवं स्थिरता की सृष्टि करता है। शारीरिक और मानसिक तत्त्व के आचार्य जानते हैं कि कुछ तत्त्वों की पुरुष में अधिकता और स्त्री में न्यूनता होती है। इसी प्रकार कुछ तत्त्व स्त्री में अधिक और पुरुष में कम होते हैं। इस अभाव की पूर्ति दोनों के सहचरत्व से होती है। स्त्री-पुरुष में एक-दूसरे के प्रति जो असाधारण आकर्षण होता है, उसका कारण वही क्षतिपूर्ति है। मन की सूक्ष्म चेतना अपनी क्षतिपूर्ति के उपयुक्त साधनों को प्राप्त करने के लिए विचलित होती है, तब उसे संयोग की अभिलाषा कहा जाता है। अंध और पंगु मिलकर देखने और चलने के लाभों को प्राप्त कर लेते हैं, ऐसे ही लाभ एक-दूसरे की सहायता से दंपत्ति को भी मिल जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मूलतः न तो पुरुष बुरा है न स्त्री। दोनों ही ईश्वर की पवित्र कृतियाँ हैं। दोनों में ही आत्मा का निर्मल प्रकाश जगमगाता है। पुरुष का कार्यक्षेत्र घर से बाहर रहने के कारण उसकी बाह्य योग्यताएँ विकसित हो जाती हैं, वह बलवान्, प्रभावशाली, कमाऊ और चतुर दिखाई देता है; पर इसके साथ-साथ ही आत्मिक सद्गुणों को इस बाह्य संघर्ष के कारण वह बहुत कुछ खो देता है। सरलता, सरसता, वफादारी, आत्म-त्याग दयालुता, प्रेम और वात्सल्य की वृत्तियाँ आज भी स्त्रियों में पुरुषों की अपेक्षा बहुत अधिक देखी जाती हैं। मुद्दतों से शिक्षा, दीक्षा, अनुभव एवं सामाजिक कार्यक्षेत्र से पृथक् एक छोटे पिंजड़े से घर में जीवन भर बंद रहने और अपनी जैसी अन्य मूर्खताओं की संगति मिलने के कारण वे बेचारी व्यवहारिक ज्ञान में बहुत कुछ पिछड़ गई हैं तो भी उनमें आत्मिक सद्गुण पुरुषों की अपेक्षा बहुत अधिक विद्यमान है। उनके सान्निध्य से नरक, पतन, माया, बंधन जैसे किसी संकट के उत्पन्न होने की आशंका नहीं है। सच तो यह है कि उनके पवित्र अंचल की छाया में बैठकर पुरुष अपनी शैतानी आदतों से बहुत कुछ छुटकारा पा सकता है। उनकी स्नेहगंगा के अमृत जल का आचमन करके अपने कलुष-कषायों से, पाप तापों से छुटकारा पा सकता है।

जिनका अंतःकरण पवित्र है। वे कोमलता की अधिकता के कारण स्त्री में और भी अधिक सत् तत्त्व का अनुभव करते हैं। हजरत मुहम्मद साहब कहा करते थे कि "मेरा स्वर्ग मेरी माता के पैरों तले हैं।" महात्मा विलियम का कथन है कि "ईश्वर ने स्त्री के नेत्रों में दो दीपक रख दिए हैं, ताकि संसार में भूले-भटके लोग उसके प्रकाश में अपना खोया हुआ रास्ता देख सकें।" तपस्वी लोवेल ने एक बार कहा था "नारी का महत्त्व मैं इसलिए नहीं मानता कि विधाता ने उसे सुंदर बनाया है, न उससे इसलिए प्रेम करता हूँ कि वह प्रेम के लिए उत्पन्न की गई है। मैं तो उसे इसलिए पूज्य मानता हूँ कि मनुष्य का मनुष्यत्व केवल उसी में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवित है।'' दिव्यदर्शी टेलर ने अपनी अनुभूति प्रकाशित की थी कि—"स्त्री की सृष्टि में ईश्वरीय प्रकाश है। वह एक मधुर सरिता है, जहाँ मनुष्य अपनी चिंताओं और दुःखों से त्राण पाता है।'' दार्शनिक प्लेटो ने कहा है—"सृष्टि के आदि में मनुष्य अपंग था, वह पृथ्वी के कोने में पड़ा सिसक रहा था। स्त्री ने ही उसे उठाया और पालकर बड़ा किया। आज वही कृतघ्न उन स्त्रियों को पैर की जूती समझता है।'' कवि हारग्रच की अनुभूति है कि—"स्त्रियाँ भूलोक की कविता है। पुरुष के भाग्य का निस्तार उन्हीं के हाथों में है।'' कार्लाइल कहा करते थे—"यदि तुम प्रेम के साक्षात् दर्शन करना चाहते हो तो माता के गद्‌गद नेत्रों को देखो।'' सृष्टि के आरंभ काल का दिग्दर्शन कराते हुए संत केलवैल ने कहा कि—"जब तक आदमी अकेला था तब तक उसे स्वर्ग भी कंटकाकीर्ण लगता था। देवताओं के गीत, शीतल समीर और ललित वाटिकाएँ उसके लिए सभी व्यर्थ थीं, यह सब होते हुए भी वह उदास रहता था और आहें भरता था, परंतु जब उसे हव्वा मिल गई तो सारा दुख दूर हो गया। काँटे फूलों में बदल गये।''

जिन संतों ने अपने पवित्र नेत्रों से नारी को देखा है उन्हें उसमें ईश्वर की सजीव कविता मूर्तिमान् दिखाई दी है। जिनकी आँखों में पाप है, उनके लिए बहिन, बेटी और माता की समीपता में ही नहीं, प्रत्येक जड़-चेतन की समीपता में खतरा है। जिनके अंचल में आग बँधी हुई है, उनके लिए सर्वत्र अग्निकांड का खतरा है, जिनकी आँखों पर हरा ठंडा चश्मा है उनके लिए कड़ी धूप भी शीतल है। पाठकों ! अपना दृष्टिकोण पवित्र बनाओ। विश्वास रखो, राजा जनक की भाँति आप भी गृहस्थ में रहते हुए सच्चे महात्मा बन सकते हैं।

गृहस्थ योग से परम पद

पुण्य और पाप किसी कार्य के बाह्य रूप के ऊपर नहीं, वरन् उस काम को करने वाले की भावना के ऊपर निर्भर है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी कार्य का बाहरी रूप कितना ही अच्छा, ऊँचा या उत्तम क्यों न हो, परंतु यदि करने वाले की भीतरी भावनाएँ बुरी हैं तो ईश्वर के दरबार में वह कार्य पाप में ही शुमार होगा। लोगों को धोखा दिया जा सकता है, दुनिया को भ्रम या भुलावे में डाला जा सकता है, परंतु परमात्मा को धोखा देना असंभव है। ईश्वर के दरबार में काम के बाहरी रूप को देखकर नहीं, वरन् करने वाले की भावनाओं को परखकर धर्म-अधर्म की नाप-तौल की जाती है।

आज हम ऐसे अनेक धूर्तों को अपने आस-पास देखते हैं, जो करने को तो बड़े-बड़े अच्छे काम करते हैं, पर उनका भीतरी उद्देश्य बड़ा ही दूषित होता है। अनाथालय, विधवाश्रम, गौशाला आदि पवित्र संस्थाओं की आड़ में भी बहुत-से बदमाश आदमी अपना उल्लू सीधा करते हैं। योगी, महात्मा, साधु-संन्यासी का बाना पहने अनेक चोर, डाकू, लुच्चे, लफंगे घूमते रहते हैं। यज्ञ करने के नाम पर, पैसा बटोरकर कई आदमी अपना घर भर लेते हैं। बाहरी दृष्टि से देखने पर अनाथालय, विधवाश्रम, गौशाला चलाना, साधु, संन्यासी, महात्मा, उपदेशक बनना, यज्ञ, कुआ, मंदिर बनवाना आदि अच्छे कार्य हैं। इनके करने वाले को पुण्यफल मिलना चाहिए, परंतु वास्तविक बात यह है कि यदि करने वाले की भावनाएँ विकृत हैं तो यह अच्छे काम भी उसकी मुख्य संपदा में कुछ वृद्धि न कर सकेंगे। वह व्यक्ति अपने पापमय विचारों के कारण पापी ही बनेगा, पाप का नरकमय दंड ही उसे प्राप्त होगा।

यदि कोई आदमी साधारण काम करता है। मामूली व्यक्तियों की तरह जीवन यापन करता है, किंतु उन साधारण कार्यों में भी उद्देश्य, मनोभाव और विचार ऊँचे रखता है तो वह साधारण काम भी तपस्या जैसा पुण्य फलदायक हो जाता है। यहीं तक नहीं, बल्कि यहाँ तक भी होता है कि बाहर से दिखने वाले अधर्म-युक्त कार्य भी यदि सद्भावना से किये जाते हैं तो वे भी धर्म बन जाते हैं। जैसे हिंसा करना, किसी के प्राण लेना, हत्या या रक्तपात करना प्रत्यक्ष पाप है। परंतु आततायी, दुष्ट और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुरात्माओं से संसार की रक्षा करने की सद्भावना से यदि दुष्टों को मारा जाता है, तो वह पाप नहीं, वरन् पुण्य बन जाता है। भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को युद्ध के लिए प्रोत्साहित करके हजारों मनुष्यों को मरवा डाला, पर इससे अर्जुन या कृष्ण को कुछ पाप नहीं लगा। राम-रावण युद्ध में बड़ा भारी जन संहार हुआ, परंतु उन दुष्टों को मारने वाले पापी या हत्यारे नहीं कहलाये। यहाँ हिंसा प्रत्यक्ष है, तो भी हिंसा करने वाले सद्भावना युक्त थे, इसलिए उनके कार्य पुण्यमय ही हुए। इसी प्रकार झूठ, चोरी, छल आदि भी समयानुसार सद् उद्देश्य से किये जाने पर धर्ममय ही होते हैं। उन्हें करने वाले को पाप नहीं लगता, वरन् पुण्य फल ही प्राप्त होता है।

उपरोक्त पंक्तियों को पढ़कर पाठकों को किसी भ्रम में न पड़ना चाहिए। हम सत्कर्मों की निंदा या असत् कार्यों की प्रशंसा नहीं कर रहे हैं। हमारा तात्पर्य तो केवल यह कहने का है कि काम का बाहरी रूप कैसा है ? इससे दुनिया की स्थूल दृष्टि ही कुछ समय के लिए चकाचौंध में पड़ सकती है, पर परमात्मा प्रसन्न नहीं हो सकता। आत्मा और परमात्मा के समक्ष तो भावना प्रधान है। संसार के लोगों की सूक्ष्म बुद्धि भी भावना को ही महत्त्व देती है। यदि किसी ने अपने किसी स्वार्थ-साधन के लिए कोई प्रीतिभोज दिया हो या और कोई ऐसा काम किया हो तो जब लोगों को असली बात का पता चलता है तो लोग उसकी चालाकी के लिए मन ही मन मुसकराते हैं, कनखिया लेते हैं और मसखरी उड़ाते हैं, धर्मात्मा की बजाय उसे चालाक ही समझा जाता है। अब दूसरी ओर चलिये, किसी आदमी द्वारा भूल से, मजबूरी से या गैर जानकारी से कोई अनुचित बात हो जाती है और जानकारी होने पर पता चलता है तो उस अनुचित बात के लिए भी क्षमा कर दिया जाता है। अदालतें भी अपराधी की नीयत पर मुख्यतया ध्यान रखती हैं। यदि अपराधी की नीयत बुरी न साबित हो तो अपराधी को कठोर दंड का भागी नहीं बनना पड़ता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन के हर एक काम की अच्छाई, बुराई कर्ता की भावना के अनुरूप होती है। जीवन भले ही सादा हो, पर यदि विचार उच्च हैं तो जीवन भी उच्च ही माना जायेगा। रुपये-पैसे या काम के बड़े आडंबर से पुण्यफल का विशेष संबंध नहीं है। एक अमीर आदमी रुपये के बल से बड़े-बड़े ब्रह्मभोज, पूजा-पाठ, तीर्थ-यात्रा, कथा-पुराण, मंदिर-मठ, कुआ-बावड़ी, सदावर्त, यज्ञ-हवन आदि की व्यवस्था आसानी से कर सकता है। दस लाख रुपया अनुचित रीति से कमाकर दस हजार रुपया इस प्रकार के कार्यों में लगाकर धर्मात्मा बनता है। दूसरी ओर एक गरीब आदमी जो ईमानदारी की मेहनत मजदूरी करता है, वह थोड़े-से पैसे कमाता है, जिससे कुटुंब का भरण-पोषण कठिनाई से हो पाता है, बचता कुछ नहीं, ऐसी दशा में वह बेचारा भला ब्रह्मभोज, तीर्थ-यात्रा, यज्ञ-अनुष्ठान आदि की व्यवस्था किस प्रकार कर पायेगा ? यदि वह नहीं कर पाता है, तो क्या वह धर्महीन ही रह जाएगा ? क्या दुनिया की भौतिक चीजों की भाँति ही पुण्यफल भी रुपयों से ही खरीदा जाता है ?

इन प्रश्नों की मीमांसा करते हुए पाठकों को यह बात भली प्रकार हृदयंगम कर लेनी चाहिए कि पुण्य का पैसे से कोई संबंध नहीं है। पुण्य तो भावना से खरीदा जाता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में रुपये की तूती नहीं बोलती, वहाँ तो भावना की प्रधानता है। दंभ, अहंकार, नामवरी, वाहवाही, पूजा, प्रतिष्ठा के प्रदर्शन के लिए धर्म के नाम पर करोड़ रुपये खर्च करने पर भी उतना पुण्यफल नहीं मिल सकता, जितना कि आत्म-त्याग, श्रद्धा एवं सच्चे अंतःकरण से रोटी का एक टुकड़ा देने पर प्राप्त होता है। स्मरण रखिये—सोने की सुनहरी चमक और चाँदी की मधुर चमचमाहट, आत्मा को ऊँचा उठाने में कुछ विशेष सहायक नहीं होती। आत्मिक क्षेत्र में गरीब और अमीर का दर्जा बिल्कुल बराबर है, वहाँ सबके पास समान वस्तु है, समान साधन हैं। भावना हर गरीब-अमीर को प्राप्त है, उसी की अच्छाई-बुराई के ऊपर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुण्य-पाप का सारा दारोमदार है। घटनाओं का घटाटोप, चौंधिया देने वाला प्रदर्शन, बड़े-बड़े कार्यों के विराट् आयोजन रंगीन बादलों से बने हुए आकाश चित्रों की भाँति मनोरंजक तो हैं, पर उनका अस्तित्व कुछ नहीं। सच्चे हृदय से किये हुए एक अत्यंत छोटे और तुच्छ दीखने वाले कार्य का जितना महत्त्व है, उतना दंभपूर्वक किये हुए बड़े भारी आयोजन, का किसी प्रकार नहीं हो सकता। "भावना की सच्चाई और सात्त्विकता के साथ आत्म-त्याग और कर्तव्यपालन" यही धर्म का पैमाना है। इस भावना से प्रेरित होकर काम करना ही पुण्य है। सद्भावना जितनी ही प्रबल होगी आत्म-त्याग उतना ही बड़ा होगा। पैसे वाला अपने पैसे को लगाएगा, जी खोलकर सत्कार्य में लगायेगा, इसी प्रकार गरीब के पास जो साधन हैं, उसको ईमानदारी के साथ खर्च करेगा।

लोग ऐसा समझते हैं कि धर्म-साधना के लिए, पुण्यफल प्राप्त करने के लिए, आत्मोन्नति के लिए, ईश्वर प्राप्ति के लिए, स्वर्ग या मुक्ति की उपलब्धि के लिए किन्हीं विशिष्ट, विचित्र या असाधारण कार्यों का आयोजन करने की आवश्यकता होती है। अमुक प्रकार की वेश-भूषा, अमुक प्रकार का रहन-सहन, अमुक प्रकार का साधन भक्तिप्रद है, यह मानना बिल्कुल गलत है। वेश-भूषा, रहन-सहन, साधक की सुविधा के लिए है, जिससे उसे आसानी रहे, इनके द्वारा सिद्धि किसी को नहीं मिलती। यदि वेश या रहन-सहन से ही सिद्धि मिलती होती तो आज जो साधु नामधारी लाखों कर्महीन भिखमंगे इधर-उधर मारे-मारे फिरते हैं, मुक्ति के अधिकारी हो गये होते। अनेक प्रकार की आत्मिक साधनाएँ, अनेक प्रकार के मानसिक व्यायाम हैं, जिनके द्वारा मनोभूमि को, भावना-क्षेत्र को निर्मल, पवित्र एवं सात्त्विक बनाया जाता है। आत्मोन्नति की असंख्यों साधनाएँ हैं, सभी लाभप्रद हैं; क्योंकि किसी भी रास्ते से सही भावना को उच्च बनाना है। यदि मनोभूमि उच्च न बने, तो साधना निरर्थक है। साधना एक औजार मात्र है। उसको विवेकपूर्वक काम में लाने से इच्छित वस्तु का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निर्माण हो सकता है। पर यदि विवेकपूर्वक न किया हो तो साधना निरर्थक है। अमुक पुस्तक का पाठ करने, मंत्र जपने या अभ्यास करने से यदि मनोभूमि निर्मल बनती हो तो आत्मोन्नति होगी। पर रूढ़ि की तरह अंधविश्वासपूर्वक अविवेक के साथ किसी मंत्र या पुस्तक को रटते रहा जाए, अमुक प्रकार से काया-कष्ट सहते रहा जाए तो उससे कुछ प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। जीवन-लक्ष्य को प्राप्त करना आत्मिक पवित्रता द्वारा ही संभव है। उस पवित्रता के लिए अनेकों असंख्यों साधन हैं। जिनमें से देश, काल, पात्र को देखते हुए बुद्धिमान् व्यक्ति अपने लिए उपयुक्त साधन चुन लिया करते हैं। जैसे एक ही कसरत सबके लिए अनिवार्य नहीं है, उसी प्रकार एक ही साधन हर साधक के लिए आवश्यक नहीं है। शरीर, ऋतु, खुराक, पेशा आदि को देखकर ही चतुर व्यायाम विशारद अपने शिष्यों को भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यायाम कराते हैं, उसी प्रकार आत्म-तत्त्वदर्शी आचार्य भी असंख्यों योगों में से उपयुक्त योग का अपने अनुयायियों के लिए चुनाव करते हैं।

कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को छोड़कर साधारण श्रेणी के सभी पाठकों के लिए हम गृहस्थ योग की साधना को बहुत ही उपयुक्त, उचित, सुलभ एवं सुख साध्य समझते हैं। गृहस्थ योग की साधना भी राजयोग, जपयोग, लययोग आदि की ही श्रेणी में आती है। उचित रीति से इस महान् व्रत का अनुष्ठान करने पर मनुष्य जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। जैसे कोलतार पोत देने पर हर वस्तु काली और कलई पोत देने पर सफ़ेद हो जाती है। उसी प्रकार योग की, साधना की, परमार्थ की, अनुष्ठान की दृष्टि रखकर कार्य करने से वे कार्य साधनामय परमार्थप्रद हो जाते हैं। अहंकार, तृष्णा, भोग, मोह आदि का भाव रखकर कार्य करने से उत्तम से उत्तम कार्य भी निकृष्ट परिणाम उपस्थित करने वाले होते हैं। घर-गृहस्थी के संस्थान को सुव्यवस्थित रूप से चलाने में भावनाएँ यदि ऊँची, पवित्र, निःस्वार्थ और प्रेममय रखी जावें तो निस्संदेह यह कार्य अतीव सात्त्विक एवं सद्गति प्रदान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने वाला बन सकता है। अपना आत्मा ही अपने को ऊँचा या नीचा ले जाता है। यदि आत्म-निग्रह, आत्म-त्याग, आत्मोत्सर्ग के साथ अपने जीवन-क्रम को चलने दिया जाए, तो इस सीधे-साधे तरीके की सहायता से ही मनुष्य परम पद को प्राप्त कर सकता है।

गृहस्थ योग के कुछ मंत्र

पिछले पृष्ठों पर बताया जा चुका है कि परमार्थ और स्वार्थ, पुण्य और पाप, धर्म और अधर्म यह किसी कार्य विशेष पर निर्भर नहीं, वरन् दृष्टिकोण पर अवलंबित है। दुनिया की स्थूल बुद्धि कार्यों का रूप देखकर उसकी अच्छाई-बुराई का निर्णय करती है। परंतु परमात्मा के दरबार में काम के बाहरी रूप का कुछ महत्त्व नहीं, वहाँ तो भावना ही प्रधान है। भावना का आरोपण मनुष्य की आंतरिक पवित्रता से संबंधित है। बनावट, धोखेबाजी और प्रवंचना बाहर तो चल सकती है, पर अपनी आत्मा के सामने नहीं चल सकती। अंतःकरण स्वयमेव जान लेता है कि अमुक कार्य किस दृष्टिकोण से किया जा रहा है, वहाँ कोई छिपाव या दुराव काम नहीं दे सकता, वरन् जो बात सत्य है वह ही मनोभूमि की स्वच्छ पट्टिका पर स्पष्ट रूप से अंकित होती है। जिस कार्य-प्रणाली के द्वारा अंतःकरण में आत्म त्याग, सेवा, प्रेम एवं सद्भाव का संचार होता हो तो वह कार्य सच्चा और पक्का परमार्थ है। वह कार्य निस्संदेह स्वर्ग और मुक्ति की ओर ले जाने वाला होगा, चाहे उस कार्य का बाह्य रूप कैसा ही साधारण या असाधारण, सीधा या विचित्र, छोटा या बड़ा क्यों न हो ?

गृहस्थ संचालन के संबंध में भी दो दृष्टिकोण हैं। एक तो ममता, मालिकी, अहंकार और स्वार्थ का, दूसरा आत्म-त्याग, सेवा, प्रेम और परमार्थ का। पहला दृष्टिकोण बंधन, पतन, पाप और नरक की ओर ले जाने वाला है। दूसरा दृष्टिकोण मुक्ति, उत्थान, पुण्य और स्वर्ग को प्रदान करता है। शास्त्रकारों ने, संत पुरुषों ने,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिस गृहस्थ की निंदा की है, बंधन बताया है और छोड़ देने का आदेश दिया है, वह आदेश स्वार्थमय दृष्टिकोण के संबंध में है। परमार्थमय दृष्टिकोण का गृहस्थ तो अत्यंत उच्चकोटि का आध्यात्मिक साधना है। उसे तो प्रायः सभी ऋषि, मुनि, महात्मा, योगी, यती तथा देवताओं ने अपनाया है और उसकी सहायता से आत्मोन्नति का मार्ग प्रशस्त किया है। इस मार्ग को अपनाने से उनमें से न तो किसी को बंधन में पड़ना पड़ा और न नरक को जाना पड़ा। यदि गृहस्थ धर्म बंधनकारक, नरकमय होता तो उससे पैदा होने वाले बालक पुण्यमय कैसे होते ? बड़े-बड़े योगी, यती इस मार्ग को क्यों अपनाते ? निश्चय ही गृहस्थ धर्म एक परम पवित्र, आत्मोन्नति कारक, जीवन को विकसित करने वाला, धार्मिक अनुष्ठान है, एक सत् समन्वित आध्यात्मिक साधना है। गृहस्थ का पालन करने वाले व्यक्ति को ऐसी हीन भावना मन में लाने की कुछ भी आवश्यकता नहीं है कि वह अपेक्षाकृत नीचे स्तर पर है या आत्मिक क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है या कमजोर है। अविवाहित जीवन और विवाहित जीवन में तत्त्वतः कोई अंतर नहीं है। यह अपनी-अपनी सुविधा, रुचि और कार्य प्रणाली की बात है, जिसे जिसमें सुविधा पड़ती हो, वह वैसा करे। जिसका कार्यक्रम देशाटन का हो, उन्हें स्त्री-बच्चों का झंझट पालने की आवश्यकता नहीं, परंतु जिन्हें एक स्थान पर रहना हो, उसके लिए विवाहित होने में ही सुविधा है। इसमें पिछड़े हुए और बढ़े हुए की कुछ चीज नहीं, दोनों का दर्जा बिल्कुल बराबर है। मानसिक स्थिति और कार्य-प्रणाली के आधार पर तुच्छता और महानता होती है। जहाँ भी ऊँचा दृष्टिकोण होगा वहाँ ही महानता होगी।

जीवन का परम लक्ष्य आत्मा को परमात्मा में मिला देना है। व्यक्तिगत स्वार्थ को प्रधानता न देते हुए लोकहित की भावना से काम करना, यही आध्यात्मिक साधना है। इस साधना को क्रियात्मक जीवन में लाने के लिए भिन्न-भिन्न तरीके हो सकते हैं। उन तरीकों में से एक तरीका गृहस्थ योग भी है। बालक घर में से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही प्रारंभिक क्रियाएँ सीखता है। जीवन के लिए जितने काम चलाऊ ज्ञान की आवश्यकता है, उनका आधे से अधिक भाग घर में ही प्राप्त होता है। हमारी आत्मिक साधना भी घर से आरंभ होनी चाहिए। जीवन को उच्च, उन्नत, संस्कृत, संयमित, सात्त्विक, सेवामय एवं परमार्थ पूर्ण बनाने की सबसे अच्छी प्रयोगशाला अपना घर ही हो सकता है। स्वाभाविक प्रेम, उत्तरदायित्व, कर्तव्य-पालन, परस्पर अवलंबन, आश्रय, स्थान, स्थिर क्षेत्र, लोक-लाज आदि अनेक कारणों से यह क्षेत्र ऐसा सुविधाजनक हो जाता है कि आत्मत्याग और सेवामय दृष्टिकोण के साथ काम करना इस क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक सरल होता है।

गृहस्थ योग के साधक के मन में यह विचारधारा चलती रहनी चाहिए कि—"यह परिवार मेरा साधना क्षेत्र है। इस वाटिका को सब प्रकार सुंदर, सुरभित और पल्लवित बनाने के लिए सच्चे हृदय से सदा शक्ति भर प्रयत्न करते रहना, मेरा कर्मकांड है। भगवान् ने जिस वाटिका को सींचने का भार मुझे दिया है, उसे ठीक तरह सींचते रहना, मेरी ईश्वर परायणता है। घर का कोई भी सदस्य ऐसा हीन दर्जे का नहीं है, जिसे मैं तुच्छ समझूँ—उपेक्षा करूँ या सेवा से जी चुराऊँ। मैं मालिक, नेता, मुखिया या कमाऊ होने का अहंकार नहीं करता—यह मेरा आत्म-निग्रह है। हर एक सदस्य के विकास में अपनी सेवाएँ लगाते रहना, मेरा परमार्थ है। बदले की जरा-सी भी इच्छा न रखकर, विशुद्ध कर्तव्य भाव से सेवा में तत्पर रहना, मेरा आत्म त्याग है। अपनी सुख-सुविधाओं की परवाह न करते हुए औरों की सुख-सुविधा बढ़ाने का प्रयत्न करना मेरा तप है। घर के हर सदस्य को सद्गुणी, सत् स्वभाव का, सदाचारी एवं धर्मपरायण बनाकर विश्व की सुख-शांति में वृद्धि करना, मेरा यज्ञ है। सबके हृदयों पर जिसका मौन उपदेश हो, अनुकरण से सुसंस्कार बनें, अपना आचरण ऐसा पवित्र एवं आदर्शमय रखना, मेरा व्रत है। धर्म उपार्जित अन्न से जीवन निर्वाह करना और कराना यह मेरा संयम है। प्रेम, उदारता, सहानुभूति की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भावना से ओत-प्रोत रहना और रखना, प्रसन्नता, आनंद और एकता की वृद्धि करना और मेरी आराधना है। मैं अपने गृह-मंदिर में भगवान् की चलती-फिरती प्रतिमाओं के प्रति अगाध भक्ति भावना रखता हूँ। सद्गुण, सत् स्वभाव और सत् आचरण के दिव्य श्रृंगार से इन प्रतिमाओं को सुसज्जित करने का प्रयत्न ही मेरी पूजा है। मेरा साधन सच्चा है, साधना के प्रति मेरी भावना सच्ची है, अपनी आत्मा के सम्मुख मैं सच्चा हूँ। सफलता-असफलता की जरा भी परवाह न करके सच्चे निष्काम कर्मयोगी की भाँति मैं अपने प्रयत्न की सच्चाई में संतोष अनुभव करता हूँ। मैं सत्य हूँ, मेरी साधना सत्य है। मैंने सत्य का आश्रय ग्रहण किया है, उसे सत्यतापूर्वक निबाहने का प्रयत्न करूँगा।''

उपरोक्त मंत्र हर गृहस्थ योगी को भली प्रकार हृदयंगम कर लेना चाहिए। दिन में कई बार इस मंत्र को दुहराना चाहिए। एक छोटे कार्ड पर सुंदर अक्षरों में लिखकर इस मंत्र को अपने पास रख लेना चाहिए और जब भी अवकाश मिले एक-एक शब्द का मनन करते हुए इस मंत्र को पढ़ना चाहिए। हो सके तो अक्षरों में लिखकर एक सुंदर चित्र की भाँति इसे अपने कमरे में लगा लेना चाहिए। प्रातः निद्रा त्यागने पर पलंग पर पड़े-पड़े ही कई बार इस मंत्र को मन ही मन दुहराना चाहिए और निश्चय करना चाहिए कि आज दिन भर इन भावनाओं को अधिक से अधिक मात्रा में कार्य रूप में परिणित करने का प्रयत्न करूँगा। परिवार वालों के साथ व्यवहार करते समय मंत्र की भावना का सतर्कतापूर्वक ध्यान रखूँगा। इस निश्चय के साथ शय्या त्याग करने का असर दिन भर रहता है। प्रातःकाल जो आदेश अंतर्मन को दिये हैं अधिक गहरे उतर जाते हैं, वे जल्दी विस्मरण नहीं होते और यथा अवसर वे ठीक समय पर स्मरण हो आते हैं। इसलिए प्रातःकाल इस मंत्र को नियमित रूप से अवश्य ही दुहराना चाहिए—

"मैं गृहस्थ योगी हूँ। मेरा जीवन साधनामय है। दूसरे कैसे हैं? क्या करते हैं? क्या सोचते हैं? क्या कहते हैं? इसकी मैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तनिक भी परवाह नहीं करता। अपने आप में संतुष्ट रहता हूँ, मेरी कर्तव्यपालन की सच्ची साधना इतनी महान् है, इतनी शांतिदायिनी, इतनी तृप्तिकारक है कि उसमें मेरी आत्मा आनंद में सराबोर हो जाती है। मैं अपनी आनंदमयी साधना को निरंतर जारी रखूँगा। गृह-क्षेत्र में परमार्थ भावनाओं के साथ ही काम करूँगा।'' यह संकल्प दृढतापूर्वक मन में जमा रहना चाहिए। जब भी मन विचलित होने लगे, जब भी पैर पीछे डिगने की संभावना प्रतीत हो तब इस संकल्प को मनोयोगपूर्वक दृढ़ करना चाहिए।

रात्रि को सोने से पूर्व दिन भर के कार्यों पर विचार करना चाहिए। (१) आज परिवार से संबंध रखने वाले क्या-क्या कार्य किये ? (२) उसमें क्या भूल हुई ? (३) स्वार्थ से प्रेरित होकर क्या अनुचित कार्य किया ? (४) भूल के कारण क्या अनुचित काम हुआ ? (५) क्या-क्या कार्य अच्छे, उचित और गृहस्थ योग की मान्यता के अनुरूप हुए ? इन पाँच प्रश्नों के अनुसार दिन भर के पारिवारिक कार्यों का विभाजन करना चाहिए और आगे से त्रुटियों के सुधार का उपाय सोचना चाहिए। (१) भूल की तलाश करना, (२) उसे स्वीकार करना, (३) गलती के लिए लज्जित होना और (४) उसे सुधारने का सच्चे मन से प्रयत्न करना—यह चार बातें जिसे पसंद हैं, जो इस मार्ग पर चलता है, उसकी गलतियाँ दिन-दिन कम होती जाती हैं और वह शीघ्र ही दोषों से छुटकारा पा लेता है।

गृहस्थ योग की साधना के मार्ग पर चलते हुए साधक के मार्ग में नित नई कठिनाइयाँ आती रहती हैं। कभी अपनी भूल से, कभी दूसरों की भूल से, ऐसी घटनाएँ घटित हो जाती हैं, जिनका नियत सिद्धांत से मेल नहीं खाता। इच्छा रहती है कि अपना हर एक आचरण ठीक रहे, हर एक क्रिया सिद्धांतानुकूल हो, परंतु अक्सर भूलें होती रहती हैं, साधक कुछ दिन तक सोचता है कि दस-बीस दिन में या महिने में यह दूर हो जाएगी और मेरी संपूर्ण क्रियाएँ सिद्धांतानुकूल होने लगेंगी, पर जब काफी समय बीत जाता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है और तब भी भूलें समाप्त नहीं होतीं तो चिंता, निराशा और पराजय की भावनाएँ मन में घूमने लगती हैं। साधक सोचता है, इतने दिन से प्रयत्न कर रहा हूँ, पर स्वभाव पर विजय नहीं मिलती, नित्य गलतियाँ होती हैं, ऐसी दशा में साधना चल नहीं सकती। कभी सोचता है, हमारे घर वाले उजड्ड, गँवार, मूर्ख और कृतघ्न हैं। यह लोग मुझे परेशान एवं उत्तेजित करते हैं और मेरे जीवन को साधना की नियत दशा में नहीं चलने देते तो साधना व्यर्थ है, इस प्रकार के निराशाजनक विचारों से प्रेरित होकर वह अपने व्रत को छोड़ देता है।

उपरोक्त कठिनाई से हर साधक को आगाह हो जाना चाहिए। मनुष्य स्वभाव में त्रुटियाँ और कमजोरियाँ रहना निश्चित है। जिस दिन मनुष्य पूर्णरूपेण त्रुटियों से परे हो जाएगा, उसी दिन वह परम पद को प्राप्त कर लेगा, जीवन मुक्त हो जाएगा। जब तक उस मंजिल तक नहीं पहुँच जाता, तब तक मनुष्य योनि में है, देव योनि से पीछे है, तब तक यही मानना पड़ेगा कि मनुष्य त्रुटिपूर्ण है। जहाँ कई ऐसे व्यक्तियों का सम्मिलन है, जिससे कोई तो आत्मिक भूमिका में बहुत आगे, कोई बहुत पीछे हैं—ऐसे क्षेत्र में नित नई त्रुटियों का कठिनाईयों का सामने आना स्वाभाविक है। इनमें से कुछ अपनी गलती के कारण उत्पन्न हुई होंगी, कुछ अन्यों की गलती से। यह क्रम धीरे-धीरे दूर तो होता जाता है, पर यह कठिन है कि अपना परिवार पूर्णरूपेण देव परिवार हो जाए, इसके लिए बहुत कठिनाई से डरने, घबराने या विचलित होने की कुछ भी आवश्यकता नहीं है। साधना का अर्थ ही—"त्रुटियों के सुधार का अभ्यास" है। अभ्यास को निरंतर जारी रखना चाहिए। योगीजन नित्य प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा-ध्यान आदि की साधना करते हैं, क्योंकि उनको मनोभूमि अभी दोषपूर्ण है। जिस दिन उनके दोष सर्वथा समाप्त हो जाएँगे, उसी दिन, उसी क्षण वे ब्रह्म निर्वाण को प्राप्त कर लेंगे। दोषों का सर्वथा अभाव, यह अंतिम सीढ़ी का सिद्ध अवस्था का लक्षण है। वहाँ तक पहुँच जाने पर तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुछ करना ही बाकी नहीं रह जाता। साधकों को यह आशा न करनी चाहिए कि थोड़े ही समय में इच्छित भावनाएँ पूर्ण रूप से क्रिया में आ जाएँगी। विचार क्षण भर में बन जाता है, पर उसे संस्कार का रूप धारण करने में बहुत समय लगता है। हथेली पर सरसों नहीं जमती। पत्थर पर निशान करने के लिए रस्सी की रगड़ बहुत समय तक जारी रहनी चाहिए। स्मरण रखिए, दोषों से सर्वथा मुक्ति—लक्ष्य है, ध्येय है, सिद्ध अवस्था है। साधक का आरंभिक लक्षण यह नहीं है। आम का पौधा उगते ही यदि मीठे आम तोड़ने के लिए उसके पत्तों को टटोलेंगे तो मनोकामना पूर्ण न होगी।

गृहस्थ योग की अपनी साधना आरंभ करते हुए आप इस बात के लिए कमर कसकर तैयार हो जाइए कि भूलों, त्रुटियों, कठिनाइयों और असफलताओं का आपको नित्य सामना करना पड़ेगा, नित्य उनसे लड़ना पड़ेगा, नित्य उनका संशोधन और परिमार्जन करना होगा और अंत में एक न एक दिन सारी कठिनाइयों को परास्त कर देना होगा। जैसे—भूख, निद्रा, मल त्याग आदि नित्य कर्मों को रोज करते हैं तो भी दूसरे दिन फिर उनकी जरूरत पड़ती है। इस रोज-रोज के झमेले से कोई निराश या अनुत्साहित नहीं होता, वरन् धैर्यपूर्वक नित्य ही उसकी व्यवस्था की जाती है। इसी प्रकार गृहस्थ योग की साधना में अपनी या दूसरों की कमजोरी से जो भूलें हों उनसे डरना या निराश न होना चाहिए, वरन् अधिक दृढ़ता एवं उत्साह से परिमार्जन का धैर्यपूर्वक प्रयत्न करते रहना चाहिए।

पूर्ण रूप से सुधार हुआ है या नहीं, यह देखने की अपेक्षा यह देखना चाहिए कि पहले की अपेक्षा सात्त्विकता में कुछ वृद्धि हुई है या नहीं ? यदि थोड़ी-बहुत भी बढ़ोत्तरी हुई हो तो यह आशा, उत्साह, प्रसन्नता और सफलता की बात है। बूँद-बूँद से घड़ा भर जाता है, कण-कण जोड़ने से मन जमा हो जाता है, राई-राई इकट्ठा करने से पर्वत बन जाता है। यदि प्रतिदिन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थोड़ी-थोड़ी सफलता भी मिले, तो हमारे शेष जीवन के असंख्य दिनों में वह सफलता बड़ी भारी मात्रा में जमा हो सकती है। यह संपत्ति किसी प्रकार नष्ट होने वाली नहीं है। यह जमा होने का क्रम अगले जन्म में भी जारी रहेगा और लक्ष्य तक एक न एक दिन पहुँच ही जाया जायेगा, धीरे-धीरे सफलता मिले, तो अधिक उत्साह से काम करना चाहिए। निराश होकर छोड़ बैठने की कोई आवश्यकता नहीं है।

आप जब आत्म निरीक्षण द्वारा अपनी भूलों को देखें, तो देखकर निराश न हों, वरन् इस भावना को मनःक्षेत्र में स्थान दें—"वीर योद्धा की तरह मैं जीवन युद्ध में रत हूँ। चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करते समय के जो बुरे संस्कार अभी हम लोगों में लगे हुए शेष रह गये हैं, वे बार-बार मार्ग में विघ्न उपस्थित करते हैं, कभी मैं गलती कर बैठता हूँ कभी दूसरे गलती कर देते हैं। आये दिन ऐसे विघ्न सामने आते रहते हैं, परंतु मैं उससे जरा भी विचलित नहीं होता, मैं नित्य इन कठिनाइयों से लड़ूँगा। ठोकर या चोट खाकर भी चुप न बैठूँगा। गिर पड़ने पर फिर उठूँगा और धूलि झाड़कर फिर युद्ध करूँगा। लड़ने वाला ही गिरता और घायल होता है, कुसंस्कार यदि मुझे गिरा देते हैं तो भी मुझे उनके विरुद्ध युद्ध जारी ही रखना चाहिए। मैं सत्य मार्ग का पथिक हूँ, सच्चिदानंद आत्मा हूँ, अपने और दूसरों के कुसंस्कारों से निरंतर युद्ध जारी रखना और उन्हें परास्त कर देने तक दम न लेना ही मेरा कर्तव्य है। मैं अपने संकल्प, व्रत, साधन और उद्देश्य के प्रति सच्चा हूँ। अपनी सच्चाई की रक्षा करूँगा और इन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करके रहूँगा। भूलों को नित्य परखने, पकड़ने और उन्हें हटाने का कार्य मैं सदा एक रस उत्साह के साथ जारी रखूँगा।"

उपरोक्त मंत्र को सफलता के निरीक्षण के साथ मनन करना चाहिए। इससे निराशा नहीं आने पाती। गृहस्थ योग के मूलभूत सिद्धांतों का बीज मंत्र, दृढ़ता का संकल्प और त्रुटियों से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म युद्ध जारी रखने की प्रतिज्ञा यह तीनों ही महामंत्र साधक की मनोभूमि में खूब गूँजनी चाहिए। अधिक से अधिक समय इन विचारधाराओं से ओत-प्रोत रहना चाहिए।

परिवार की चतुर्विधि पूजा

स्वार्थ बुद्धि से व्यवहृत होने वाले गृहस्थ को माया-बंधन कहा गया है। "मैं घर का स्वामी हूँ। घर के प्रत्येक सदस्य को मेरी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए, प्रत्येक को मेरी इच्छानुसार चलना चाहिए, प्रत्येक को मेरी मर्जी और सुविधा का आचरण करना चाहिए, मैं जिस तरह रखना चाहूँ उस तरह रहना चाहिए।" इस प्रकार की इच्छा और आकांक्षाओं को लेकर जो गृहस्थ में प्रवेश करता है, उसे निस्संदेह उसमें नरक, दुःख, क्लेश, भार, बंधन या माया के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं पड़ता। यह संभव नहीं कि सब लोग आपकी मनमर्जी के बन जावें। गुण, कर्म और स्वभाव की भिन्नता हर मनुष्य में पाई जाती है, अनेक जन्मों के संचित संस्कारों के समूह द्वारा स्वभाव बनता है, प्रयत्न करने पर उसमें सुधार तो हो जाता है, पर यह संभव नहीं कि कोई प्राणी अपनी मौलिकता को बिल्कुल खो दे। हर व्यक्ति की रुचि-इच्छा, वृत्ति, भावना एवं प्रवृत्ति भिन्न होती है। मिट्टी के पुतले की तरह चुपचाप हर एक आज्ञा को मन, वचन और कर्म से कोई शिरोधार्य कर ले, यह संभव नहीं। इस प्रकार कुछ न कुछ मतभेद रहता ही है, अपने स्वार्थों का संघर्ष नहीं मिट सकता, इस प्रकार आपकी आज्ञा मानने में जहाँ जिसके निजी स्वभाव में, स्वार्थ में संघर्ष होता होगा, वह व्यक्ति आज्ञापालन में आनाकानी करेगा। इसके अतिरिक्त यह बात भी है कि अपनी मर्जी यदि पारिवारिक स्थिति की अपेक्षा बहुत आगे बढ़ गई तो भी दूसरे उसे मानने में तत्पर न होंगे। ऐसी दशा में जो असंतोष, मन मुटाव, क्रोध, कलह एवं संघर्ष होगा, वह अशांति का कारण बनेगा। घर में दुख ही दुख दिखाई देगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसी दुखदायी स्थिति उत्पन्न न होने पाये, इसके लिये समझौते की नीति से काम लेना पड़ता है। अपनी मर्जी पर अड़ने या उसे दूसरों पर बलात् थोपने की अपेक्षा अपने आपको नरम बनना पड़ता है। जिस सीमा तक कोई दुष्परिणाम उपस्थित न होता हो उस सीमा तक समझौता कर लेना चाहिए। यह ठीक है कि घर के लोगों को ठीक मार्ग पर रखना अपना कर्तव्य है, पर यह भी ठीक है कि पूर्ण रूप से किसी को तत्काल इच्छानुवर्ती बना लेना भी सुगम नहीं। थोड़ा झुकने से ही काम चलता है। समझौते की नीति से गुजर होती है। सर्कस के लिए जानवरों को सधाने वाले मास्टर जानते हैं कि उजड्ड जंगली जानवरों को रास्ते पर लाने में, इच्छित खेल सिखाने में, कितनी देर लगती है, कितना नरम-गरम होना पड़ता है। बिल्कुल कड़ाई और बिल्कुल ढील यह दोनों ही बातें उपयोगी नहीं। बीच के रास्ते से चलना, उदारता और सहनशीलता के आधार पर काम करना ही हितकर होता है। इसी आधार पर घर की सुख-शांति कायम रह सकती है।

शांति, संतोष और व्यवस्था कायम रखने का तरीका यह है कि आत्म त्याग की नीति को प्रधानता दी जाए। आप अपना उदाहरण ऐसा रखें, जिसे देखकर घर के अन्य लोगों को भी आत्म-त्याग की प्रेरणा मिले। "मुझे कम आपको ज्यादा" यह भाव जितनी ही प्रधानता प्राप्त करेंगे, उतनी ही शांति और सुव्यवस्था कायम रहेगी। गृहस्थ योगी को, अपने को, एक निःस्वार्थ, निष्पक्ष एवं सद्भावी सेवक के रूप में घर वालों के सामने उपस्थित करना चाहिए। घर के लोगों से मुझे क्या लाभ मिलता है ? यह लोग मेरे आत्म-त्याग की कद्र करते हैं या नहीं ? इन प्रश्नों को मन में कभी प्रवेश न करने देना चाहिए। वरन् सदा यह सोचना चाहिए कि एक ईमानदार माली की तरह मैं अपनी वाटिका को सुरभित बनाने में शक्ति भर प्रयत्न करता हूँ या नहीं ? अपनी योग्यता और सामर्थ्य में से कुछ चुराता तो नहीं हूँ ? मेरी निःस्वार्थता और निष्पक्षता में किसी प्रकार कमी तो नहीं आ रही है ? कर्तव्यपालन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में किसी प्रकार का आलस्य या प्रमाद तो नहीं हो रहा है ? यदि इन प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर मिलता हो, तो यह बड़ी ही आनंददायक और शांतिप्रद बात समझी जानी चाहिए। प्रशंसा होती है या नहीं ? कोई अहसान मिलता है या नहीं ? सफलता मिलती है या नहीं ? ऐसे प्रश्नों का लेखा लेना अपनी साधना को चौपट करना है। इन प्रश्नों का संतोषजनक या असंतोषजनक उत्तर देना दूसरों के हाथ की बात है। साधक को अपनी प्रसन्नता दूसरों के हाथ नहीं बेचनी चाहिए ? दूसरों के कुछ देने से प्रसन्नता मिले, यह एक कंगाली की स्थिति है। हमें आनंद का स्रोत अपनी आत्मा में ढूँढना चाहिए। यदि ठीक प्रकार कर्तव्य का पालन किया गया हो तो इससे अधिक आनंददायक दुनिया की और कोई बात नहीं हो सकती।

संसार की सुख-शांति में वृद्धि करना, यही तो परमार्थ का लक्षण है। प्याऊ, धर्मशाला, कुआँ, तालाब, बावड़ी, बगीचा, सड़क, पाठशाला, औषधालय आदि का निर्माण करने वाले धर्मात्मा लोग इन कार्यों द्वारा दूसरे लोगों के कष्ट-निवारण और सुख में वृद्धि करना चाहते हैं। अनेक प्रकार की संस्थाओं के स्थापन और संचालन का भी यही उद्देश्य है। महात्मा, त्यागी, वैरागी, तपस्वी, देशभक्त, लोकसेवक, परोपकारी सत्पुरुषों की साधना भी इसी उद्देश्य के लिए होती है। शास्त्रकारों ने विश्व की सुख-शांति बढ़ाने वाले कार्यों का करना ही धर्म तथा ईश्वर प्रणिधान बताया है और कहा है कि ऐसे कार्यों से ही मनुष्य को लोक-परलोक में पुण्य फल प्राप्त होता है। परमार्थ का यह कार्य अनेक रीतियों से किया जाता है। उन रीतियों में एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण रीति यह भी है कि मनुष्यों में सत् तत्त्व की वृद्धि की जाए। यही रीति सर्वोपरि है। किसी को अन्न, जल, वस्त्र आदि दान देने की अपेक्षा उसके विचार और कार्यों को उत्तम बना देना अनेक गुना पुण्य है। कारण यह है कि जो व्यक्ति सद्गुणी, सदाचारी और सद्भावी बन जाता है, वह सुगंधित पुष्प की भाँति जीवन भर हर घड़ी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समीपवर्ती लोगों को शांति प्रदान किया करता है। सज्जन पुरुष एक प्रकार का जीवित और चलता-फिरता सदावर्त है, जो प्रतिदिन प्रचुर परिमाण में आत्मिक भोजन देकर अनेक व्यक्तियों को सच्चा प्राण दान देता है। दस हजार सदावर्त या जलाशय स्थापित करने की अपेक्षा एक पुण्यात्मा मनुष्य तैयार कर देना अधिक सुफल प्रदान करने वाला है।

अपने परिवार में यदि अच्छी भावना और विचारधारा ओत-प्रोत कर दी जाए, तो कुटुंबियों के स्वभाव और चरित्र में सात्त्विकता की वृद्धि होगी और फिर उसके द्वारा अनेक लोगों को पथ-प्रदर्शन मिलेगा। एक पेड़ के बीज अनेकों नये पौधे उत्पन्न करते हैं और फिर उन नये पौधों के बीज और नये-नये पेड़ उपजाते हैं, एक से दस, दस से सौ, सौ से हजार, इस प्रकार यह शृंखला फैलती है और आगे निरंतर बढ़ती ही रहती है। इस प्रकार यदि सत् स्वभाव के चार मनुष्य बना दिये गये, तो उनका प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हजारों-लाखों मनुष्यों पर पड़ता है। हरिश्चंद्र, शिवि, दधीचि, शिवाजी, राणाप्रताप आदि की तरह कोई-कोई तो ऐसे निकल आते हैं, जिनका शरीर मर जाने पर भी 'यश शरीर' जीवित रहता है और लाखों-करोड़ों वर्षों तक वह यश शरीर संसार में धर्म भावना का संचार करता रहता है। मनुष्य को सात्त्विक, उच्च, महान् बनाना इतना महान् पुण्य कार्य है, जिसकी ईंट-पत्थर से बनने वाले छोटे-छोटे कार्यों से कोई तुलना नहीं की जा सकती। शास्त्र में लिखा है कि शिष्य के पाप-पुण्यों के दसवें भाग का हिस्सेदार उसका गुरु होता है। जिस अध्यापक की कक्षा के लड़के अधिक फेल होते हैं, उसका दर्जा घट जाता है और जिसका परीक्षाफल अच्छा रहता है, उसको तरक्की मिलती है। कारण यह है कि बच्चों के फेल-पास होने के साथ अध्यापक का परिश्रम जुड़ा हुआ है, इसलिए लड़कों के फेल-पास होने में निंदा-प्रशंसा का भागी अध्यापक को भी बनना पड़ता है। इसी प्रकार स्वजनों के सत्गुणी या दुर्गुणी होने का पुण्य-पाप गृह संचालक को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी लगता है। यदि स्वजनों को अपने परिश्रम, सद्भाव और आत्म-त्याग द्वारा अच्छा, सच्चा और उन्नत बनाया तो यह उच्च कोटि के पुण्य कार्य से किसी प्रकार कम न होगा। यदि सब लोग अपने-अपने परिवारों को सुधारें तो सारी दुनिया का थोड़े ही समय में सुधार होना संभव है। यदि अपने-अपने क्षेत्र की जिम्मेदारी सब लोग पूरी कर लें तो इस पृथ्वी पर स्वर्ग उतरा हुआ ही समझिये।

सूक्ष्म दृष्टि से यह निरीक्षण करते रहना चाहिए कि घर के हर एक स्त्री, पुरुष, बालक को शारीरिक और मानसिक उन्नति का समुचित अवसर मिल रहा है या नहीं ? जीवन विकास और भविष्य निर्माण के स्वाभाविक अधिकार से कोई वंचित तो नहीं हो रहा है ? किसी को अनावश्यक सुविधा तो नहीं मिल रही ? और किसी पर अनुचित दबाव तो नहीं पड़ रहा है ? इन तीनों प्रश्नों पर बारीकी से नजर डालते रहने से यह बात मालूम होती रहती है कि किस व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है ? कुछ ऐसी प्रथा चल पड़ी है कि लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को, स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों को और बिना कमाने वालों या कम कमाने वालों की अपेक्षा अधिक कमाने वाले को अधिक सुविधा दी जाती है। खाने, पहनने, मनोरंजन तथा सम्मान पाने में वे आगे रहते हैं। बेचारी लड़कियाँ और स्त्रियाँ तो एक प्रकार के फालतू प्राणी समझे जाते हैं, उनकी सुविधा एवं आवश्यकता और विकास की ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। यह अन्याय मिटना और मिटाया जाना चाहिए। स्त्रियों, लड़कियों, न कमाने वालों और रोगी, वृद्ध या असमर्थों को भी उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप समुचित सुविधाएँ मिलनी चाहिए।

यह चिंता करना गलत है कि कम आमदंनी होने के कारण घर के सब लोगों की आवश्यकता किस प्रकार पूरी की जा सकेगी ? छोटी आमदनी होने पर जीवन निर्वाह का व्यवस्था क्रम मितव्ययी और सादगीपूर्ण बना लेना चाहिए। मोटा कपड़ा, मोटा अनाज, साधारण रहन-सहन रखने और टीम, टाम, फैशन,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तड़क-भड़क, दिखावट की अनावश्यक चीजों का स्वेच्छा और प्रसन्नतापूर्वक त्याग कर देने से थोड़ी आमदनी में अच्छी तरह काम चल सकता है। अमीर, फजूलखर्च, फैशन परस्त, छैल-छबीले लोगों की नकल करने में अनावश्यक पैसा खर्च करने में कुछ भी बुद्धिमानी नहीं है। सादगी में सात्त्विकता है। समय को फजूल कार्यों में से बचाकर शरीर, वस्त्र और मकान को साफ, निर्मल एवं उज्ज्वल रखा जा सकता है। यदि असमानता और पक्षपात चलता रहे तो अमीरी में भी कलह, वैमनस्य और दुर्भाव रहेंगे। यदि निष्पक्षता, समानता और आत्म-त्याग रहे तो गरीबी में भी प्रेम एवं संतोष का जीवन व्यतीत होगा। दुनिया में बहुत-से अमीर हैं, ठाट-बाट से रहते हैं, शान-शौकत रखते हैं, मौज-मजा करते हैं, उनके ऐश-आराम और रहन-सहन की नकल करने की जरूरत नहीं, उनकी तीक्ष्ण बुद्धि, चतुरता, परिश्रमशीलता और जागरुकता की नकल करनी चाहिए, जिन गुणों से उन्हें वैभव मिला है, उन गुणों की तरफ देखना चाहिए। उनकी दूषित नीति या फैशनपरस्ती के दोषों को अपनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। सादगी और गरीबी पारिवारिक आनंद को कायम रखने में किसी प्रकार बाधक नहीं हो सकती।

स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन तथा भविष्य-निर्माण का हर एक को अवसर मिलना चाहिए। यह देखते रहना चाहिए कि किसी के ऊपर ऐसा शारीरिक या मानसिक दबाव तो नहीं पड़ रहा है, जिसके कारण उसका स्वास्थ्य नष्ट होता हो। आहार-विहार के असंयम के कारण कोई अपने को अस्वस्थता के मार्ग पर तो नहीं बढ़ाये लिये जा रहा है, यह ध्यान रखने की बात है। यदि बहुमूल्य, बढ़िया, पौष्टिक भोजन प्राप्त न होता हो, मोटा-झोटा खाकर गुजारा करना पड़ता हो तो इसमें कोई चिंता की बात नहीं। इससे स्वास्थ्य नष्ट नहीं हो सकता, आहार-विहार की व्यवस्था ही वह दोष है, जिसके कारण स्वास्थ्य नष्ट होता है। कीमती से कीमती भोजन इस दोष से होने वाले नुकसान को पूरा नहीं कर सकता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भोजन, शयन, व्यायाम, मल त्याग, स्नान, सफाई, ब्रह्मचर्य, नियत-परिश्रम आदि का ध्यान रखा जाए तो अस्वस्थता से बचा रहा जा सकता है। यदि कभी बीमारी का अवसर आये और रोग साधारण हों तो बड़े-बड़े डॉक्टरों की लंबी फीसें चुकाने और विलायती दवाओं के लिए घर खाली कर देने की आवश्यकता नहीं है। किसी अनुभवी और सहृदय व्यक्ति की सलाह से मामूली दवादारू के द्वारा रोग-निवारण की कोशिश करनी चाहिए। तेज और जहरीली दवाओं की भरमार से उस समय तो लाभ हो जाता है, पर पीछे अनेक उपद्रव उठ खड़े होते हैं। इसलिये उपवास, फलाहार एवं मामूली चिकित्सा से रोग को दूर करना चाहिए।

शरीर की भूख बुझाने के लिये जैसे भोजन आवश्यक है उसी प्रकार मानसिक भूख को बुझाने के लिए शिक्षा आवश्यक है। घर के हर व्यक्ति को शिक्षित बनाना चाहिए। जो स्कूल जा सकते हों, वे स्कूल में शिक्षा प्राप्त करें। जिनके लिए यह संभव न हो, वे घर पर पढ़ें। बच्चे, जवान या बूढ़े कोई भी क्यों न हों, सभी को पढ़ने की रुचि उत्पन्न करनी चाहिए; और उसके लिए साधन तथा व्यवस्था का प्रबंध करना चाहिए। एक-दो घंटे नियमित रूप से गृह पाठशाला चलती रहे। अक्षर ज्ञान हो जाने के उपरांत ऐसी चुनी हुई पुस्तकें उन्हें देनी चाहिए जिससे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, धार्मिक आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान क्रमशः बढ़ता रहे। जीवन विज्ञान की आवश्यक समस्याओं को वे समझें और उन पर बारीकी के साथ विचार करना सीखें तथा प्रामाणिक व्यक्तियों की उस विषय पर सम्मतियाँ पढ़ें। रामायण आदि धार्मिक पुस्तकें पढ़ना ठीक है, परंतु केवल मात्र इतिहास, पुराणों तक ही सीमित न रहना चाहिए। जीवन संग्राम की प्रत्यक्ष समस्याओं को समझाना और सुलझना भी आवश्यक है। यह भी धर्म का ही अंग है। अक्षर ज्ञान, शब्द-कोष, व्याकरण आदि द्वारा भाषा का ज्ञान बढ़ाना चाहिए, साथ-साथ आवश्यक विषयों पर सत्संग, विवाद, प्रश्नोत्तर, शंका-समाधान, प्रवचन आदि उपायों से जानकारी,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुद्धिमत्ता, विचारशक्ति की भी वृद्धि होनी चाहिए। शिक्षा एवं विद्या की वृद्धि का अवसर हर एक को आवश्यक रूप से उसी प्रकार मिलना चाहिए जैसे कि भोजन की व्यवस्था जरूरी होती है।

स्वास्थ्य और शिक्षा के बाद मनोरंजन का प्रश्न आता है। वह भी एक आवश्यक प्रश्न है। यदि मनुष्य को आनंदित होने, उल्लसित होने, हँसने, प्रसन्न होने, खेलने, मनोविनोद करने का अवसर न मिले तो उसकी मनोभूमि बड़ी कर्कश, चिड़चिड़ी, असहिष्णु और निराशामय बन जाएगी। जो सदा कोल्हू के बैल की तरह काम में जुते रहते हैं, कैदी की तरह एक नियत क्षेत्र में काम करते रहते हैं, भोजन, मजूरी और निद्रा यही तीन कार्यक्रम जिनके रहते हैं, उनकी मानसिक चेतना की सरसता धीरे-धीरे सूखती जाती है और वे भीतर-बाहर से अनुदार, विरोधी, दोषारोपण करने वाले, अविश्वासी, डरपोक और कायर बन जाते हैं। ऐसे लोगों को दुनिया के प्रति सदा अविश्वास और असंतोष रहता है। इन प्रवृत्तियों के कारण शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य नष्ट होने लगता है, आयु घटने लगती है और बुढ़ापा घेर लेता है।

पौधे को विकसित होने के लिए अच्छी जमीन और पानी की जरूरत है, पर साथ ही हवा भी चाहिए। इसी प्रकार जीवन विकास के लिए, भोजन, शिक्षा तथा मनोरंजन से वंचित रहते हैं, वे एक बड़ा अन्याय करते हैं। नीतिकारों का वचन है कि 'जो संगीत, साहित्य तथा कला से विहीन है, वह बिना सींग, पूँछ का पशु है, इस कथन का तात्पर्य मनोरंजनरहित, शुष्क, नीरस जीवन की भर्त्सना करना है। निश्चय ही मनोरंजन एक आवश्यक भोजन है, जिसके बिना जीवन मुरझाने लगता है। कुरुचिपूर्ण, दूषित, अश्लील, मनोरंजन से बचना ठीक है। सादा और सात्त्विक मनोरंजनों को तलाश करना चाहिए और उसके आधार पर मनोविनोद करना चाहिए। संगीत, गायन, वाद्य, भ्रमण, सम्मिलन, सहभोज, उत्सव, मेला, प्रतियोगिता, चित्रकला, व्याख्यान, देशाटन, प्रदर्शनी, सजावट, अद्‌भुत और ऐतिहासिक वस्तुओं का निरीक्षण, खेल, यात्रा आदि अनेक मार्गों से यथा अवसर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनोरंजन के छोटे-मोटे साधन प्राप्त किये जा सकते हैं। घर के पुरुषों को तो ऐसे अवसर मिलते रहते हैं, पर स्त्रियों और बालकों को इससे वंचित रहना पड़ता है। यह उचित नहीं, उन्हें भी यथासंभव ऐसे अवसर देने चाहिए। छोटे बालकों के लिए खिलौने जुटाते रहना चाहिए। मनोविनोद के कार्य में यदि थोड़ा पैसा खर्च होता हो तो उसमें कंजूसी न करनी चाहिए, क्योंकि इस मार्ग में जो उचित खर्च होता है, वह फजूलखर्ची नहीं, वरन् जीवन की एक वास्तविक आवश्यकता की पूर्ति है।

चौथी बात भविष्य निर्माण की है। आज की जरूरत किसी प्रकार पूरी हो जाए, केवल मात्र इतने से संतुष्ट न हो जाना चाहिए, वरन् यह देखना चाहिए कि हर व्यक्ति का भविष्य उन्नत, सुखमय, समृद्ध, प्रकाशवान् एवं उज्ज्वल कैसे हो सकता है ? प्राणी के जन्म धारण करने का उद्देश्य किसी प्रकार दिन काटते रहना नहीं, वरन् यह है कि वह अपनी स्थिति को ऊँचा उठाये, आगे बढ़े और अधिक साधन-संपन्न होता हुआ निरंतर विकसित हो। ऊँचा, ऊँचा और अधिक ऊँचा जीवन बने, इसके लिए सदैव सोचने और प्रयत्न करते रहने की आवश्यकता है। भीतर और बाहरी जीवन के दोनों पहलू निरंतर विकसित होते रहें, ऐसा कार्यक्रम सदा जारी रहना चाहिए। भविष्य में उन्नति कर सकने के लिए जिन साधनों की आवश्यकता है, उन साधनों को जुटाने के लिए सदैव ध्यान रखना आवश्यक कर्तव्य है। अपनी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक कठिनाई को हल करने योग्य शिक्षा, योग्यता और अनुभव संपादन किये बिना जीवन सुखमय नहीं बन सकता। इसलिये पढ़ने-लिखने की, कमाने की, स्वस्थ रहने की, बीमारी से बचे रहने की, बोलने-चालने की, लेने-देने की योग्यताएँ एकत्रित करने के अवसर हर एक को मिलने चाहिए। अपने पैरों पर खड़े होकर अपनी योग्यता से अपना निर्वाह कर लेने की क्षमता संपादन करने का आरंभ से ही ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि दुर्भाग्यवश ऐसे अवसर भी जीवन में आ सकते हैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब नियत संपत्ति से या स्वजनों से हाथ धोना पड़े। ऐसे समय में वही मनुष्य विजयी होता है, जिसने विपत्ति से लड़ने योग्य शस्त्रों से अपने को पहले से ही सुसज्जित कर रखा हो।

इन चारों बातों को घर के हर मनुष्य के ऊपर लागू करके देखना चाहिए कि इन आवश्यकताओं में से कौन-सी बात किसे प्राप्त नहीं हो रही है ? जो बात जिसे प्राप्त नहीं हो रही हो, उसे प्राप्त कराने का यथा शक्ति अवश्य ही उद्यम करना चाहिए। यदि घर के दस आदमियों का जीवन किसी हद तक सुखी और समृद्ध बनाया जा सका, तो समझिये कि विश्व कल्याण में, परमार्थ में, धर्म विस्तार में वृद्धि हुई और अपने को पुण्य फल मिला। यदि प्रयास प्रत्यक्ष रूप से सफल न भी हो तो भी लाभ ही है, क्योंकि अपनी सद्भावनाएँ सदा अपने मस्तिष्क में काम करती रहेंगी और वे शुभ-संस्काराें के रूप में अंतःक्षेत्र में अपनी जड़ जमा लेंगी। यह शुभ संस्कार चुपचाप पल्लवित होते रहते हैं और अपने लोक-परलोक को नाना विधि से आनंदित एवं सुख-समृद्धियुक्त बनाते रहते हैं।

पारिवारिक स्वराज्य

'अनावश्यक संकोच' पारिवारिक कलह की वृद्धि में सबसे प्रधान कारण है। बाहर के आदमियों से तो हम घुल-घुलकर बात करते हैं, परंतु घर वालों से सदा उदासीन रहते हैं, बहुत ही संक्षिप्त वार्तालाप करते हैं। बहुत कम परिवार ऐसे देखे जाते हैं, जिनमें घर के लोग एक-दूसरे से अपने मन की बातें कह सकें। शिष्टाचार, बड़प्पन, लिहाज, लाज, पर्दा आदि का वास्तविक रूप नष्ट होकर उसका ऐसा विकृत स्वरूप बन गया है कि घर के सब लोग अपनी-अपनी मनोभावनाएँ, आवश्यकताएँ और अनुभूतियाँ एक-दूसरे के सन्मुख रखते हुए झिझकते हैं। इस गलती का परिणाम यह होता है कि एक-दूसरे को ठीक तरह समझ नहीं पाते। किसी बात पर मतभेद हो, तो उस भेद को अवज्ञा, अपमान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

या विरोध मान लिया जाता है ऐसा नहीं होना चाहिए। किसी बात का निर्णय करना हो, तो घर के सभी सलाह दे सकने के योग्य स्त्री-पुरुषों की सलाह लेनी चाहिए। अपने अभाव प्रकट करने का हर एक को अवसर दिया जाए। जो काम करना हो उसे इस प्रकार अच्छी भूमिका के साथ, तर्क और उदाहरणों के साथ रखना चाहिए कि उस पर घरवालों की सहमति मिल जाए। हर व्यक्ति यह अनुभव करे कि मेरे आदेश से ही यह कार्य हुआ। जिस प्रकार राज्य संचालन में प्रजा की सहमति आवश्यक है, उसी प्रकार गृह व्यवस्था में परिजनों की सहमति रहने से शांति और सुव्यवस्था रहती है। राजनीतिक स्वराज्य से देश में अमनोअमान कायम रहता है। पारिवारिक स्वराज्य से परिवार में सुव्यवस्था रहती है। परिवार की प्रजा यह न समझे कि किसी की इच्छा जबरदस्ती हमारे ऊपर थोपी जा रही है, वरन् उसे यह भान होना चाहिए कि सबके लाभ और सबके हित के लिए विचार-विनिमय और विवेक के साथ नीति निर्धारित की गई है तथा औचित्य एवं ईमानदारी को व्यवस्था-संचालन में प्रधान स्थान दिया जा रहा है। इस सरल, स्वाभाविक और बिना किसी कठिनाई की नीति का जिस परिवार में पालन किया जाता है, वहाँ सब प्रकार सुख-शांति बनी रहती है।

सास-बहुओं में, ननद-भौजाइयों में, देवरानी जिठानियों में अक्सर छोटी-छोटी बातों पर लड़ाई हुआ करती है। स्त्री जाति को मानसिक विकास के अवसर प्रायः कम ही उपलब्ध होते हैं इसलिए उनकी उदारता संकुचित होती है। निस्संदेह पुरुष की अपेक्षा आत्म-त्याग और स्नेह की मात्रा स्त्रियों में बहुत अधिक होती है, पर वह अपने बच्चे या पति में अत्यधिक लग जाने के कारण दूसरों के लिए कम बचती है। समझा-बुझाकर, एक-दूसरे के लिए उदारता प्रकट करने का अवसर देकर, उन्हें यह अनुभव करना चाहिए कि परिवार के सब सदस्य बिलकुल निकटस्थ, बिलकुल सगे हैं। विरानेपन या परायेपन की दृष्टि से सोचने की दुर्भावना को हटाकर आत्मीयता की दृष्टि से सोचने योग्य उनकी मनोभूमि को तैयार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करना चाहिए। बड़े-बूढ़े यह आशा न करें कि हमारे साथ शिष्टाचार की अति बरती जानी चाहिए, उन्हें छोटों के प्रति क्षमा, उदारता, प्रेम और सहानुभूति का व्यवहार करना चाहिए। दास, नौकर या गुलाम जैसा नहीं। इसी प्रकार छोटों को बड़ों के प्रति आदर-भाव रखना चाहिए, घर के अन्य कामों की अपेक्षा पहले आवश्यकता और इच्छाओं को पूरा करना चाहिए। घर का काम-धंधा आमतौर से बँटा हुआ रहना चाहिए। बीमारी, कमजोरी, गर्भावस्था या अन्य किसी कठिनाई की दशा में दूसरों को उसका काम आपस में बाँटकर उसे हलका कर देना चाहिए। नित्य पहनने के जेवरों को छोड़कर अन्य जेवर सम्मिलित रखे जा सकते हैं, जिनका आवश्यकतानुसार सब उपयोग कर लें। आपको यदि पैसे की सुविधा हो तो सबके लिये अलग-अलग जेवर भी बन सकते हैं, पर वे सबके पास करीब-करीब समान होने चाहिए। नई शादी होकर आने वाली बहू के लिए अपेक्षाकृत कुछ अधिक चीजें होना स्वाभाविक है। विशेष अवस्था को छोड़कर साधारणतः सबका भोजन वस्त्र करीब-करीब एक-सा ही होना चाहिए। इस प्रकार स्त्रियों में एकता रह सकती है।

यदि कोई गलती कर रहा हो तो एकांत में उसे प्रेमपूर्वक उसकी ऊँच-नीच, लाभ-हानि समझानी चाहिए। सबके सामने कड़ा विरोध करना, अपमान करना, गाली बकना, मारना-पीटना बहुत अनुचित है। इससे सुधार कम और बिगाड़ अधिक होता है। द्वेष-दुर्भाव और घृणा की वृद्धि होती है, यह सब होना एक अच्छे परिवार के लिए लज्जाजनक है। समझाने से आदमी मान जाता है और अपमानित करने से वह क्रुद्ध होकर प्रतिशोध लेता एवं उपद्रव खड़े करता है।

दूसरों की आँख बचाकर अपने लिये अधिक लेना बुरा है। बाजार में चुपके से स्वादिष्ट पदार्थ चट कर आना, चुपके-चुपके निजी कोष बनाना, अपने मनोरंजन, शौक या फैशन के लिए अधिक खर्च करना, घर भर को ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, असंतोष और निंदा के लिए आमंत्रित करना है। बाहर व्यवसाय क्षेत्र में काम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने के लिए यदि बढ़िया कपड़ों की आवश्यकता है, तो सब लोगों को यह अनुभव करना चाहिए कि यह शौक या फैशन के लिए नहीं, आवश्यकता के लिए किया गया है। अधिक परिश्रम की क्षतिपूर्ति के लिए यदि कुछ विशेष खुराक की जरूरत है तो दूसरों को यह महसूस होने देना चाहिए कि यह चटोरेपन के लिए नहीं जीवन-रक्षा के लिए किया गया है। भावनाएँ छिपती नहीं, चटोरापन या फैशनपरस्ती बात-बात में टपकती है। विशेष आवश्यकता की विशेष पूर्ति केवल विशेष अवसर पर ही रहती है, शेष आचरण सबके साथ घुला-मिला और समान रहता है। जिसे जो विशेष सुविधा प्राप्त करनी हो, वह प्रकट रूप से होनी चाहिए।

मधुर भाषण, प्रसन्न रहना, दूसरों को प्रसन्न रखना आवश्यक है और इन सबसे अधिक आवश्यक यह है कि परिवार का खर्च चलाने के लिए ईमानदारी से परिश्रमपूर्वक पैसा कमाया जाए। अनुचित रूप से कमाया हुआ अन्न सबकी मन, बुद्धि को दूषित करता है और फिर वे दोष नाना प्रकार से कलह, दुर्भाव और दुर्गुणों के रूप में प्रकट होते हैं। ईमानदारी से कमाये हुए अन्न से ऐसा सात्त्विक रक्त बनता है कि उससे शारीरिक और मानसिक स्वस्थता एवं सात्त्विकता अपने आप प्रचुर परिमाण में प्राप्त होती है और उसके आधार पर बिना अधिक परिश्रम के सद्भाव बढ़ते रहते हैं।

गृहस्थ योगी को चाहिए कि अपने परिवार को सेवा-क्षेत्र बनाये। परिजनों को ईश्वर की प्रतिमूर्तियाँ समझकर उनकी सेवा में दत्तचित्त रहें, उन्हें भीतरी और बाहरी स्वच्छता से समन्वित करके सुशोभित बनाये। इस प्रकार अपनी सेवावृत्ति और परमार्थ-भावना का जो नित्य पोषण करता है, उसकी अंतःचेतना वैसी ही पवित्र हो जाती है जैसे अन्य योग साधकों की। गृहस्थी योगी को वही सद्गति उपलब्ध होती है जिसे अन्य योगी प्राप्त करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सद्व्यवहार की आवश्यकता

गृह-कलह की चिनगारी जिस घर में सुलग जाती है, उसमें बड़ा अप्रिय, कटु और दुःखदायी वातावरण बना रहता है। इसका कारण अधिकांश में यह होता है कि एक-दूसरे के प्रति उचित शिष्टता और सम्मान का ख्याल नहीं रखा जाना। आर्थिक हानि-लाभ के आधार पर उतने कलह नहीं होते, जितने शिष्टता, सम्मान, सभ्यता, मधुरता के अभाव के कारण होते हैं। यह कमी दूर की जानी चाहिए। परिवार के हर सदस्य को उचित सम्मान प्राप्त करने का अधिकार है, किसी के अधिकारों पर अनावश्यक कुठाराघात न होना चाहिए। जो कोई अशिष्टता, उच्छृंखलता, उद्दंडता, अहंकार, अपमान या कटु भाषण की नीति अपनाता हो, उसे प्रेमपूर्वक समझाया-बुझाया जाना चाहिए और आपसी स्नेह भाव में कमी के कारणों को ढूँढ़कर उचित समाधान करना चाहिए।

जरा-सी बात पर तुनककर न्यारे-साझे की तुच्छता नहीं फैलने देनी चाहिए। जहाँ तक संभव हो सम्मिलित परिवार ही रहना चाहिए। सम्मिलित रहने में आत्मिक विकास की जितनी सुविधा है, उतनी अलग रहने में नहीं है। परंतु यदि ऐसा लगे कि आपसी मनोमालिन्य बढ़ रहा है, गृह-कलह शांत होने में सफलता नहीं मिलती या अलग रहने में अधिक सुख-शांति की संभावना ही हो तो प्रेमपूर्वक अलग-अलग हो जाना चाहिए।

गृहस्थ आश्रम एक सिद्ध आश्रम है। यदि गृहस्थ धर्म का परिपूर्ण निष्ठा से पालन किया जाए तो यह लोकोत्तर योग की सिद्धि प्रदान करता है। वस्तुतः यह सिद्ध योगों में से एक अनुभूत योग है।

❐ ❐

मुद्रक- युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org